AKSHANSH
PUBLICATION

PTET

प्रवेश पूर्व परीक्षा

विगत वर्षों के प्रश्न पत्र हल सहित

राजस्थान एवं भारत का सामान्य ज्ञान | मानसिक योग्यता

शिक्षण अभिक्षमता | हिन्दी | ENGLISH

7 संभाग और 41 जिलों पर आधारित

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

आसान, सटीक एवं
संपूर्ण अध्ययन
अब एक ही पुस्तक से !

मारवाड़ी सर | रतन सर | कुणाल सर | अनिल सर | गौरव राजपूत सर | राहुल सर | शिवानी मैम

अक्षांश पब्लिकेशन

M. 9079798005, 6376491126

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

AKSHANSH

PTET

प्रवेश पूर्व परीक्षा

राजस्थान एवं भारत का सामान्य ज्ञान | मानसिक योग्यता

शिक्षण अभिक्षमता | हिन्दी | ENGLISH

सम्पूर्ण स्टडी गाइड

"अक्षांश प्रकाशन की समस्त पुस्तकें लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर के अनुभवी शिक्षकों के मार्गदर्शन एवं अक्षांश प्रकाशन की समर्पित टीम के सहयोग से तैयार की गई हैं।"

संपादक

गौरव सर, रतन सर, कुणाल सर, अनिल सर, शिवानी मैम, मारवाड़ी सर, राहुल सर

सह संपादक

गंगासिंह भाटी, अनोप चंद मंडा

प्रकाश मेघवाल, अमृत लाल, धर्मेश

MRP : ₹799

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन, उदयपुर (राज.)

नोट :- अब लक्ष्य क्लासेज़ की सभी आगामी पुस्तकें केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के माध्यम से ही प्रकाशित की जाएंगी। ये सभी पुस्तकें बाजार में 'अक्षांश' नाम से ही उपलब्ध होंगी। विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि आगामी समय में 'लक्ष्य' नाम से कोई भी पुस्तक प्रकाशित नहीं की जाएगी। इसलिए कृपया पुस्तक खरीदते समय केवल 'अक्षांश प्रकाशन' के नाम से प्रकाशित और अधिकृत पुस्तकें ही बुक स्टोर्स से प्राप्त करें, ताकि आपको प्रमाणिक, अद्यतन एवं परीक्षा-उपयुक्त सामग्री प्राप्त हो।भविष्य में 'लक्ष्य' नाम से प्रकाशित किसी भी पुस्तक की सामग्री या गुणवत्ता की जिम्मेदारी 'अक्षांश प्रकाशन' या 'लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर' की नहीं होगी।

प्रकाशन

अक्षांश प्रकाशन

Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle,
Main Road, Udaipur

लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करे

TELEGRAM INSTAGRAM YOUTUBE FACEBOOK WHATSAPP

बुक कोड - AP0073

©सर्वाधिकार - अक्षांश प्रकाशन
lakshyaclassesudr@gmail.com

मुख्य वितरक - लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
M. 9079798005, 6376491126

इस पुस्तक में दी गई सभी जानकारियाँ, तथ्य और सूचनाएँ सावधानीपूर्वक सत्यापित की गई हैं। फिर भी यदि किसी जानकारी या तथ्य में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसके लिए प्रकाशक, संपादक या मुद्रक जिम्मेदार नहीं होंगे।

हमारा विश्वास है कि इस पुस्तक की सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से तैयार की गई है। यदि किसी प्रकार का कॉपीराइट उल्लंघन सामने आता है, तो उसकी जिम्मेदारी प्रकाशक की नहीं होगी।

सभी विवादों के निपटारे के लिए न्यायिक क्षेत्र उदयपुर रहेगा।

अक्षांश प्रकाशन ने इस पुस्तक के तथ्यों तथा विवरणों को उचित स्त्रोतों से प्राप्त किया है। इस पुस्तक में प्रकाशित सभी प्रकार की सामग्री पूर्णतः तथ्यात्मक विश्लेषण पर आधारित है। इस पुस्तक के किसी भी भाग और सामग्री को अक्षांश प्रकाशन की अनुमति और जानकारी के बिना अन्यत्र प्रकाशित या प्रिन्ट करना अनुचित है, यदि ऐसा पाया जाता है तो व्यक्ति या संस्थान स्वयं जिम्मेदार है।

विषय वस्तु

01 मानसिक योग्यता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	संख्या & अक्षर श्रृंखला	1-9
2.	लुप्त संख्या	10-15
3.	कोडिंग-डिकोडिंग	16-26
4.	रक्त सम्बन्ध	27-34
5.	दिशा परीक्षण	35-44
6.	घड़ी परीक्षण	45-52
7.	कैलेण्डर	53-59
8.	सादृश्यता	60-67
9.	वर्गीकरण या बेमेल को अलग करना	68-70
10.	वर्णमाला परीक्षण	71-75
11.	तार्किक वेन आरेख	76-80
12.	जल एवं दर्पण छवियाँ	81-85
13.	आकृतियों की गणना	86-91
14.	क्रम परीक्षण	92-97
15.	बैठक व्यवस्था एवं पहेली परीक्षण	98-103
16.	घन, घनाभ और पासा	104-113
17.	आयु परीक्षण	114-116
18.	विविध	117-120
19.	न्याय वाक्य	121-131
20.	कथन और निष्कर्ष	132-138
21.	कथन एवं तर्क	139-142
22.	कथन एवं कार्यवाही	143-146
23.	कथन एवं पूर्वधारणाएँ	147-149

02 शिक्षण अभिक्षमता

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	शिक्षण अधिगम	1 – 12
2.	नेतृत्व गुण	13 – 18
3.	सृजनात्मकता	19 – 23
4.	सतत् एवं समग्र (व्यापक) मूल्यांकन	24 – 32
5.	संप्रेषण	33 – 37
6.	व्यावसायिक अभिवृत्ति	38 – 40
7.	सामाजिक संवेदनशीलता	41 – 47

03 राजस्थान का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	1-4
2.	भौतिक प्रदेश	5–10
3.	अपवाह तंत्र	11-17
4.	जलवायु	18-22
5.	मृदा	23-24
6.	वन एवं वनस्पति	25-29
7.	कृषि	30-36
8.	सिंचाई परियोजना	37-40
9.	परिवहन	41-44
10.	खनिज	45-61
11.	जनसंख्या	62-66

04 राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रमुख दुर्ग	1-10
2.	महल एवं स्मारक	11-15
3.	हवेलियाँ, बावड़ियाँ एवं छतरियाँ	16-22
4.	मंदिर, मकबरे, मस्जिद एवं दरगाह	23-28
5.	मेले एवं त्योहार	29-35
6.	लोककला एवं हस्तकला	36-45
7.	चित्रकला	46-51

8.	लोक गीत एवं संगीत	52-56
9.	लोक नृत्य एवं नाट्य	57-64
10.	लोक देवता एवं देवियाँ	65-71
11.	संत-सम्प्रदाय	72-78
12.	आभूषण, वेशभूषा एवं खान-पान	79-86
13.	रीति रिवाज एवं प्रथाएँ	87-92
14.	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	93-94

05 राजस्थान का इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राजस्थान के इतिहास के स्रोत	1-6
2.	प्रमुख सभ्यताएँ	7-13
3.	प्रमुख राजवंश, प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था	14-37
4.	1857 की क्रांति	38-43
5.	किसान आन्दोलन	44-52
6.	जनजातीय आन्दोलन	53-56
7.	राजनीतिक जनजागरण एवं प्रजामण्डल आन्दोलन	57-69
8.	राजस्थान का एकीकरण	70-73
9.	प्रमुख व्यक्तित्व	74-79

06 राजस्थान की राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	राज्यपाल	1-3
2.	मुख्यमन्त्री एवं मन्त्रिपरिषद्	4-6
3.	राज्य विधानसभा	7-9
4.	उच्च न्यायालय	10-11
5.	राज्य लोक सेवा आयोग	12-13
6.	राज्य निर्वाचन आयोग	14
7.	राज्य सूचना आयोग	15
8.	राज्य मानवाधिकार आयोग	16
9.	लोकायुक्त	17-18
10.	जिला प्रशासन	19-20
11.	पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन	21-26

07 भारतीय इतिहास

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	सिंधु घाटी सभ्यता	1-3
2.	वैदिक सभ्यता	4-7
3.	जैन एवं बौद्ध धर्म	8-9
4.	महाजनपद काल	10-12
5.	मौर्य साम्राज्य	13-17
6.	गुप्त साम्राज्य	18-23
7.	गुप्तोत्तर काल	24-33
8.	भक्ति एवं सूफी आंदोलन	34-37
9.	1857 की क्रांति	38-41
10.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	42-48
11.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	49-63

08 भारत का भूगोल

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	स्थिति एवं विस्तार	1-2
2.	भौतिक स्वरूप	3-11
3.	जलवायु	12-15
4.	प्राकृतिक वनस्पति	16-19
5.	वन्यजीव	20-24
6.	बहुउद्देशीय परियोजना	25-28
7.	मृदा	29-31
8.	खनिज संसाधन	32-36
9.	भारत की जनसंख्या	37-42

09 भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	भारतीय संविधान एवं उसकी विशेषताएँ	1-6
2.	प्रस्तावना	7-8
3.	मौलिक अधिकार	9-10
4.	मूल कर्तव्य	11-12
5.	राष्ट्रपति	13-14
6.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	15-17
7.	संसद	18-21
8.	उच्चतम न्यायालय	22-25

10 हिन्दी

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	हिन्दी का सामान्य परिचय	1-4
2.	वाक्य विचार	5-10
3.	संधि एवं संधि विच्छेद	11-21
4.	समास एवं समास विग्रह	22-26
5.	उपसर्ग	27-29
6.	प्रत्यय	30-37
7.	विलोम शब्द	38-46
8.	पर्यायवाची शब्द	47-50
9.	युग्म शब्द	51-56
10.	शब्द शुद्धि	57-59
11.	वाक्य शुद्धि	60-63
12.	मुहावरे	64-71
13.	लोकोक्तियाँ	72-78
14.	वाक्यांश के लिए एक सार्थक शब्द	79-83

11 ENGLISH

S.No.	CHAPTER	PAGE NO.
1.	ARTICLES	1-4
2.	PREPOSITION	5-7
3.	CONNECTIVES (CONJUNCTIONS)	8-9
4.	SENTENCES	10-13
5.	TENSE	14-21
6.	DIRECT AND INDIRECT SPEECH	22-31
7.	VOCABULARY	32-44
8.	SYNONYMS	45-50
9.	ANTONYMS	51-55
10.	SPELLING ERRORS	56
11.	ONE WORD SUBSTITUTION	57-61
12.	READING COMPREHENSION	62-66
13.	CORRECTION OF SENTENCES	67-71
14.	SPOTTING ERROR	72-75

12 विगत वर्षों के प्रश्न-पत्र

क्र.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	PTET 4th Year Paper (15-06-2025)	1-13
2.	PTET 2 Year Paper (15-06-2025)	14-24

❑❑❑❑

मानसिक योग्यता

संख्या & अक्षर श्रृंखला

संख्या & अक्षर शृंखला (Number & Letter Series)

– इस अध्याय के अन्तर्गत प्रश्न में अंको अथवा अक्षरों (अंग्रेजी) की एक निश्चित श्रृंखला दी होती है जो एक विशेष नियमानुसार होती है हमें उस नियम का पता लगाकर ही अगली संख्या ज्ञात करनी होती है।

❖ श्रृंखला के प्रश्नों को हल करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें

1. गणितीय संक्रिया में काम आने वाली महत्वपूर्ण संख्याओं वर्ग संख्या, घन संख्या, अभाज्य संख्या, सम संख्या, विषम संख्या आदि को कण्ठस्थ याद रखे।

वर्ग संख्याएँ

$1^2 = 1$	$2^2 = 4$	$3^2 = 9$
$4^2 = 16$	$5^2 = 25$	$6^2 = 36$
$7^2 = 49$	$8^2 = 64$	$9^2 = 81$
$10^2 = 100$	$11^2 = 121$	$12^2 = 144$
$13^2 = 169$	$14^2 = 196$	$15^2 = 225$
$16^2 = 256$	$17^2 = 289$	$18^2 = 324$
$19^2 = 361$	$20^2 = 400$	$21^2 = 441$
$22^2 = 484$	$23^2 = 529$	$24^2 = 576$
$25^2 = 625$	$26^2 = 676$	$27^2 = 729$
$28^2 = 784$	$29^2 = 841$	$30^2 = 900$

घन संख्याएँ

$1^3 = 1$	$2^3 = 8$	$3^3 = 27$
$4^3 = 64$	$5^3 = 125$	$6^3 = 216$
$7^3 = 343$	$8^3 = 512$	$9^3 = 729$
$10^3 = 1000$	$11^3 = 1331$	$12^3 = 1728$

1. अभाज्य संख्या-ऐसी संख्या जो 1 तथा स्वंय से भाज्य हो अभाज्य संख्या कहलाती है। 1 से 100 तक कुल 25 अभाज्य संख्या होती है।

– 2, 3, 5, 7, 11, 13, 17, 19, 23, 29, 31, 37, 41, 43, 47, 53, 59, 61, 67, 71, 73, 79, 83, 89, 97

2. श्रृंखला को हल करने के लिए कोई शॉर्ट ट्रिक नहीं है बल्कि इसका निरंतर अभ्यास ही आपको इस अध्याय पर मजबूत पकड़ बनाएगा।
3. प्रश्न की भाषा को समझकर प्रश्न को हल करने का प्रयास करे।
4. हमारे अनुभव के अनुसार प्रतियोगी परीक्षाओं में अंतर के नियम का सर्वाधिक प्रयोग होता है अतः इस नियम का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

महत्वपूर्ण नियम

Rule of Gap (अंतर का नियम)

– इस नियम के अनुसार दिए गए प्रश्न में पहली और दूसरी संख्या का अंतर, दूसरी और तीसरी संख्या का अंतर और आगे भी यही क्रम जारी रखते हुए अंतर की श्रृंखला का समूह ज्ञात करके उसी आधार पर अगली संख्या प्राप्त की जाती है। इस नियम के उदाहरण अग्रांकित है

वर्णमाला श्रृंखला

– इसके अन्तर्गत दिए गए प्रश्न में अंग्रेजी वर्णों की एक निश्चित श्रृंखला दी जाती है अतः इस श्रृंखला में वर्णों को उनके वर्णमाला क्रमांक देकर अंकीय श्रृंखला बनाई जाती है और प्रश्न को हल किया जाता है।

अंग्रेजी वर्णमाला श्रृंखला

– अंग्रेजी वर्णमाला 26 अक्षरों को विभिन्न प्रकार की श्रेणियों में क्रमित करके श्रेणी क्रम बनाया जाता है। वर्णमाला के अक्षरों की कोई न कोई एक निश्चित श्रेणी क्रम होती है।

अंग्रेजी वर्णमाला

अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों का स्थानीय क्रमांकित मान के साथ निरूपण								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
1	2	3	4	5	6	7	8	9
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
10	11	12	13	14	15	16	17	18
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
19	20	21	22	23	24	25	26	

अंग्रेजी वर्णमाला का विपरीत क्रम								
A	B	C	D	E	F	G	H	I
26	25	24	23	22	21	20	19	18
J	K	L	M	N	O	P	Q	R
17	16	15	14	13	12	11	10	9
S	T	U	V	W	X	Y	Z	
8	7	6	5	4	3	2	1	

बड़े अक्षरों की शृंखला

– इस प्रकार की शृंखला के अंतर्गत कुछ अक्षर या अक्षर समूह एक निश्चित तरीके के आधार पर शृंखला के रूप में दिए होते हैं। इस शृंखला के एक या कुछ पद रिक्त होते है जिन्हें शृंखला के तरीके को ज्ञात करके करना होता है।

– इस प्रकार के प्रश्नों को हल करने के लिए आपको प्रत्येक अक्षर की वर्णमाला में स्थिति (Position) को याद कर लेना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वर्णमाला के वृत्तीय अवधारणा का ख्याल रहे, यानि की Z के बाद फिर A, B, C, D शुरू हो जाएगा।

छोटे अक्षरों की शृंखला

– इस प्रकार के प्रश्नों के अंतर्गत अक्षरों की एक शृंखला दी गई होती है। इस प्रकार की शृंखला अंग्रेजी वर्णमाला के छोटे अक्षरों को विभिन्न तरीकों में आवर्तित करके बनायी जाती है जो बायीं ओर से दायीं ओर किसी विशेष क्रम में बदलते हैं। शृंखला में एक से अधिक रिक्त स्थान हो सकते हैं। परीक्षार्थी को यह ज्ञात करना होता है कि यदि अक्षर इसी क्रम में बदलते रहें तो रिक्त स्थानों पर कौन-से अक्षर होने चाहिए। दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर शृंखला को पूर्ण करना होता है।

(A) शृंखला के अंतर्गत केवल एक समान समूह पुनरावृत्ति है।
(B) जब शृंखला में एक समान यह समूह की पुनरावृत्ति न हो बल्कि समूह के अन्तर किसी एक अक्षर की संख्या में लगातार वृद्धि होती जाए।
(C) शृंखला के प्रत्येक समूह में अलग-अलग अक्षरों की पुनरावृत्ति।
(D) शृंखला के अंतर्गत दो अक्षर समूहों का एकांतर में आना।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश :- (1-15)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अंक शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

1. 120, 99, 80, 63, 48, ?
(a) 35 (b) 38
(c) 39 (d) 40

2. 0, 6, 24, 60, 120, 210, ?
(a) 240 (b) 290
(c) 336 (d) 504

3. 4, 9, 25, ?, 121, 169, 289, 361
(a) 49 (b) 64
(c) 36 (d) 81

4. 1, 3, 3, 6, 7, 9, ?, 12, 21
(a) 10 (b) 11
(c) 12 (d) 13

5. 2, 5, 9, ?, 20, 27
(a) 14 (b) 16
(c) 18 (d) 20

6. 1, 6, 15, ?, 45, 66, 91
(a) 25 (b) 26
(c) 27 (d) 28

7. 22, 24, 28, ?, 52, 84
(a) 38 (b) 36
(c) 42 (d) 46

8. 240, ?, 120, 40, 10, 2
(a) 180 (b) 240
(c) 420 (d) 480

9. 28, 33, 31, 36, ?, 39
(a) 32 (b) 34
(c) 38 (d) 40

10. 1, 5, 13, 25, 41, ?
(a) 51 (b) 57
(c) 61 (d) 63

11. 6, 17, 39, 72, ?
(a) 83 (b) 94
(c) 116 (d) 127

12. 2, 3, 5, 7, 11, ?, 17
(a) 12 (b) 13
(c) 14 (d) 15

13. 1, 4, 27, 16, ?, 36, 343
(a) 25 (b) 87
(c) 120 (d) 125

14. 1, 1, 4, 8, 9, 27, 16, ?
(a) 32 (b) 64
(c) 81 (d) 256

15. 10, 100, 200, 310, ?
(a) 400 (b) 410
(c) 430 (d) 420

निर्देश :- (16-25)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अक्षर शृंखला दी गई है, जिसमें एक या एक से अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

16. A, C, F, J, ?, ?
(a) L, P (b) M, O
(c) O, U (d) R, V

17. B, D, F, I, L, P, ?
(a) R (b) T
(c) S (d) U

18. BMO, EOQ, HQS, ?
(a) KSU (b) LMN
(c) SOV (d) SOW

19. R, U, X, A, D, ?
(a) F (b) G
(c) H (d) I

20. a, d, c, f, ?, h, g, ?, i
(a) e, j (b) e, k
(c) f, j (d) j, e

21. AC, FH, KM, PR, ?
(a) UW (b) VW
(c) UX (d) TV

22. U, B, I, P, W, ?
(a) D (b) F
(c) Q (d) X

23. Z, ?, T, ?, N, ?, H, ?, B
(a) W, R, K, E (b) X, Q, K, E
(c) X, R, K, E (d) W, Q, K, E

24. A, G, L, P, S, ?
(a) U (b) W
(c) X (d) Y

25. T, R, P, N, L, ?, ?
(a) J, G (b) K, H
(c) J, H (d) K, I

निर्देश :-(26-35)

नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में एक अक्षर-अंक शृंखला दी गई है जिसके एक या अधिक पद लुप्त हैं, तब दिए गए विकल्पों में से लुप्त पद ज्ञात कीजिए-

26. b3P, c6R, d12T, e24V, ?
(a) f48X (b) f46X
(c) f48W (d) g48X

शिक्षण अभिक्षमता

शिक्षण अधिगम (Teaching Learning):-

- शिक्षण का अर्थ ज्ञान प्रदान करना, कौशल का विकास करना, पाठ पढ़ाना, उन्हें उत्साहित करना आदि है।
- सामान्य अर्थों में शिक्षण का अर्थ अध्यापक द्वारा अपनाये गये व्यवसाय अथवा किसी व्यक्ति विशेष को कुछ सीखाने या कुछ विशेष ज्ञान, कौशल, रुचियों और अभिवृत्ति आदि को अर्जित करने में दी जाने वाली सहायता से लिया जाता है।
- शिक्षण एक त्रिस्तरीय प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत पाठ्यक्रम के द्वारा शिक्षक व शिक्षार्थी के मध्य अन्त क्रिया होती है।

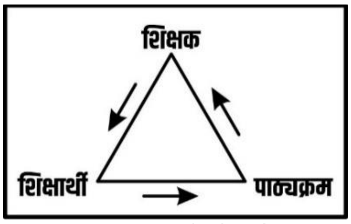

- सारांश में कहा जा सकता है कि शिक्षण वह प्रक्रिया है जो सीखने को प्रभावित करती है।
- उसका स्वरूप विभिन्न परिस्थितियों में अलग-अलग हो सकता है परंतु उन सभी का उद्देश्य छात्रों को सिखाना होता है।

शिक्षण की संकल्पना (Concept of Teaching)

- शिक्षण विद्यार्थी को कक्षा में सूचनाएँ देने मात्र तक सीमित नहीं होता वरन् इस प्रक्रिया में बच्चे का उद्दीपन, मार्ग दर्शन, दिशा-निर्देशन और सीखने के लिए प्रोत्साहन जैसी प्रक्रियाएँ सन्निहित होती है।
- उद्दीपन बच्चों को नई चीजे सीखने के लिए अभिप्रेरित करता है।
- शिक्षण दो या दो से अधिक व्यक्तियों के मध्य एक शैक्षिक सम्प्रेषण है, जो अपने विचारों से एक-दूसरे को प्रभावित करते है और अंतः क्रिया की इस प्रक्रिया से कुछ सीखते है।
- यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें शिक्षार्थी, शिक्षक, पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बद्ध चरों को किसी पूर्व निर्धारित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित रूप से संगठित किया जाता है। शिक्षण के समय शिक्षार्थियों में व्यवहारगत परिवर्तन लाने के लिए शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- शिक्षण की त्रिस्तरीय संकल्पना जॉन ड्यूवी ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी व पाठ्यक्रम को सम्मिलित किया गया।
- द्विस्तरीय संकल्पना जॉन एड्म्स ने प्रस्तुत की थी, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी को सम्मिलित किया गया।

शिक्षण की परिभाषाएं (Defination of Teaching) :-

- **क्लार्क के अनुसार,** "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके प्रारूप तथा संचालन की व्यवस्था इसलिये की जाती है, जिससे शिक्षार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा सके।"
- **स्मिथ के अनुसार**, "शिक्षण एक उद्देश्य निर्देशित क्रिया है।"
- **बी.एफ. स्कीनर के अनुसार,** "शिक्षण पुनर्बलन की आकस्मिकताओं का क्रम है।"
- **एन.एल. गेज के अनुसार,** "शिक्षण एक प्रकार का पारस्परिक प्रभाव है जिसका उद्देश्य है दूसरे व्यक्ति के व्यवहारों में वांछित परिवर्तन लाना।"
- **जेम्स. एम. थाइन,** "समस्त शिक्षण का अर्थ है सीखने में वृद्धि करना।"
- **डॉ. एन.एन. मुखर्जी** के अनुसार, "शिक्षण कार्य प्रत्येक व्यक्ति के चाय के प्याले के समान नहीं है, यह तो कला और विज्ञान है।"
- शिक्षण एक ऐसा कार्य है, जिसमें कम से कम दो लोगों की आवश्यकता होती है तथा इन दोनों के बीच विचारों/विषय-वस्तु का आदान-प्रदान होता है, इसलिए शिक्षण एक प्रक्रिया के रूप में माना जाता है।
- **मॉरीस के अनुसार, "**शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें एक अधिक परिपक्व व्यक्ति अन्त: संबंधों के द्वारा एक कम परिपक्व व्यक्ति को सिखाता है।"
- **जैक्सन** के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक परिपक्व व्यक्ति (शिक्षक) एक अपरिपक्व व्यक्ति (शिक्षार्थी) को अन्त:क्रिया के द्वारा शिक्षा प्रदान करता है।"
- **B.O. स्मिथ – "**शिक्षण क्रियाओं की एक विधि है जो सीखने की उत्सुकता जाग्रत करती है।"
- **गेज –** "शिक्षण का उद्देश्य दूसरों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाना है। इसमें पारस्परिक प्रभाव शक्ति होती है जिसमें दूसरों के व्यावहारिक क्षमता के विकास का लक्ष्य होता है।"
- **रायबर्न –** "शिक्षण छात्रों को उनकी शक्तियों के विकास में योगदान देता है।"
- **बर्टन –** "शिक्षण अधिगम हेतु उद्दीपन मार्ग प्रदर्शन व दिशा बोध है।"

शिक्षण के उद्देश्य (Aims of Teaching):-

- शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्य वस्तु के मध्य परस्पर अंतःक्रिया होती है, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है।
- **ब्लूम के अनुसार**, "शैक्षिक उद्देश्य केवल यह लक्ष्य नहीं है जिनके लिए पाठ्यक्रम बनाया जाता है और मार्गदर्शन किया जाता है, बल्कि वह लक्ष्य भी है जो शिक्षा हेतु अनिवार्य प्रविधियों के निर्माण तथा उपयोग हेतु विस्तृत विनिर्देश भी देते हैं।"

शिक्षण द्विमुखी प्रक्रिया-

- एडम्स ने शिक्षा को द्विमुखी प्रक्रिया माना है।
- इस प्रक्रिया में शिक्षक और छात्र दो व्यक्ति शामिल होते है।
- यह एक इस प्रकार की प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के विकास में बदलाव के लिए कार्य करता है।

शिक्षण त्रिमुखी प्रक्रिया-

- जॉन डी.वी. और रायबर्न के अनुसार शिक्षा की प्रक्रिया त्रिमुखी है।
- वर्तमान परिवेश में शिक्षक, शिक्षार्थी एवं विषयवस्तु के रूप में शिक्षण प्रक्रिया के तीन सोपान है।
- वर्तमान शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक एवं शिक्षार्थी मानवीय संसाधन के रूप में तथा विषयवस्तु का उपयोग भौतिक संसाधन के रूप में होता है।

शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching) :-

- **शिक्षण एक उपचार विधि है –** शिक्षण में छात्रों की कमजोरियों का निदान करके उन्हें सुधार के लिए उपचार बताया जाता है।
- **शिक्षण एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है-** शिक्षण की त्रिध्रुवीय प्रक्रिया में ब्लूम ने शिक्षण के तीन पक्ष बताये है।
  i. शिक्षण उद्देश्य ii. सीखने के अनुभव
  iii. व्यवहार परिवर्तन
- **शिक्षण एक आमने-सामने होने वाली प्रक्रिया है-** शिक्षण प्रक्रिया के समय शिक्षक तथा छात्र आमने-सामने बैठते हैं।
- **शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है-** शिक्षण प्रक्रिया के तहत् बालकों का सर्वांगीण विकास होता है।
- शिक्षण एक औपचारिक तथा अनौपचारिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक उद्देश्य (सोद्देश्य) प्रक्रिया है।
- शिक्षण का मापन किया जाता है।
- शिक्षण एक अंत:प्रक्रिया है।
- शिक्षण कला तथा विज्ञान दोनों ही है।
- यह एक अन्त: क्रिया है।
- यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
- यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।
- यह एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।
- यह एक उपचार विधि है।
- यह व्यावसायिक प्रक्रिया है।
- यह एक तार्किक क्रिया है।
- इसका मापन किया जाता है।
- इसमें सुधार तथा विकास किया जाता है।
- यह एक निर्देशन की प्रक्रिया है।
- यह एक औपचारिक तथा अनौपचारिक क्रिया है।
- यह पथ-प्रदर्शन है।
- यह संवेगों का प्रशिक्षण है।

शिक्षण अधिगम के सोपान

- शिक्षण अधिगम के चार सोपान है-

1. **नियोजन**
- इसमें पाठ्यवस्तु विश्लेषण, कार्य विश्लेषण, उद्देश्यों का निर्धारण व उनको लिखना आदि क्रियाएँ की जाती हैं।

2. **व्यवस्था**
- इसमें शिक्षण विधि का चयन, विषयवस्तु, श्रव्य-दृश्य सामग्री, सम्प्रेषण युक्तियों की सहायता से अधिगम वातावरण का निर्माण किया जाता है।

3. **मार्गदर्शन**
- शिक्षक छात्रों को प्रेरित करता है।

4. **नियंत्रण**
- शिक्षण व अधिगम की सफलता को जाँचना, पुन: योजना बनाना और मूल्यांकन करना।

शिक्षण के चर (Variables of Teaching):-

- चर किसी भी विषय-वस्तु से संबंधित वे घटक (Component) होते है जो प्रभावित करते है या प्रभावित होते है।
- शिक्षण प्रक्रिया के तीन प्रकार से चरों का अध्ययन किया जाता है जो निम्नलिखित हैं-

1. **स्वतंत्र चर (Independent Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक को स्वतंत्र चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षक ही शिक्षण व्यवस्था नियोजन तथा परिचालन का कार्य करता है।

2. **आश्रित चर (Dependent Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षार्थी को आश्रित चर की संज्ञा दी गयी है। शिक्षार्थी को शिक्षण व्यवस्था, नियोजन तथा परिचालन के अनुरूप ही क्रियाशील रहना पड़ता है।

3. **हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर (Intervening Variable)**
- शिक्षण प्रक्रिया में हस्तक्षेपी या मध्यपथ चर वे चर है जो स्वतंत्र तथा आश्रित चर के मध्य सक्रिय होते हैं।
- यह पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, मूल्यांकन तकनीकें आदि हैं। ये चर मिलकर शिक्षण प्रक्रिया को पूर्ण करते है।

शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching):-

- शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण का विभाजन भी कई प्रकार से किया जाता है।
- शिक्षण विभाजन का आधार निम्नलिखित है-

1. **शिक्षण क्रियाओं की दृष्टि से –**
- शिक्षण में अनेक प्रकार की क्रियाएं की जाती है। उन सभी क्रियाओं को तीन भागों में विभाजित कर सकते है-
  i. प्रस्तुतीकरण
  ii. प्रदर्शन
  iii. कार्य।

2. **शिक्षण के उद्देश्यों की दृष्टि से**
- शिक्षण के निम्नलिखित तीन उद्देश्य है-
  i. ज्ञानात्मक
  ii. भावात्मक
  iii. क्रियात्मक

3. **शिक्षण के स्तरों की दृष्टि से –**
- शिक्षण को निम्नलिखित तीन स्तरों में विभाजित किया गया है-

स्मृति स्तर

- शिक्षण के स्मृति स्तर के प्रवर्तक हरबर्ट स्पेन्सर थे।
- इसमें शिक्षण अधिगम मात्र स्मृति के सहारे टिका रहता है।
- छात्रों के सामने तथ्यों, सूचनाओं, नियमों तथा सूत्रों आदि के रूप में जो भी ज्ञान दिया जाता है, छात्र उसे केवल रटकर अपने ज्ञान भण्डार में वृद्धि करते रहते हैं।
- स्मृति स्तर के शिक्षण में अध्यापक की भूमिका प्रधान होती है और विद्यार्थी की गौण।
- इसमें अध्यापक छात्रों की रुचि, क्षमताओं तथा योग्यता आदि पर ध्यान दिए बिना शिक्षक अपने ढंग से शिक्षण करता है।

राजस्थान का भूगोल

राजस्थान का परिचय

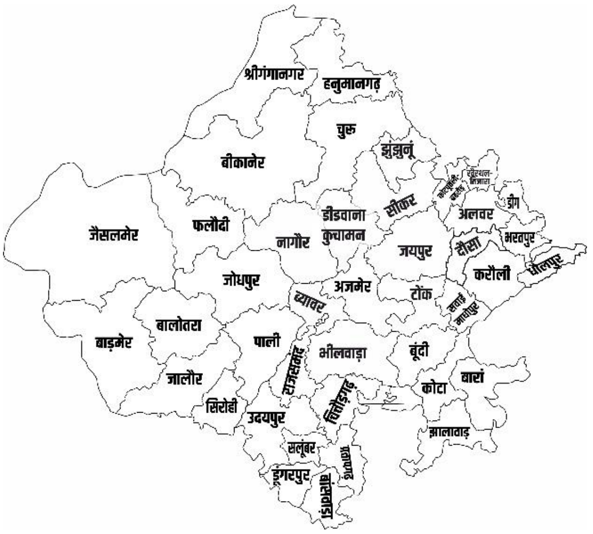

- राजस्थान क्षेत्रफल के हिसाब से भारत का सबसे बड़ा राज्य है और यह देश के उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है, (1,32,139 वर्ग मील) जो भारत के कुल क्षेत्रफल का 10.41% या 1/10वाँ भाग या दसवां हिस्सा है।
- विश्व के कुल क्षेत्रफल में राजस्थान का योगदान 0.25% है।
- (1 नवम्बर, 2000 को मध्य प्रदेश से छत्तीसगढ़ राज्य के अलग होने से राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य बना।)
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के पाँच बड़े राज्य क्रमशः राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और आन्ध्र प्रदेश है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि राजस्थान श्रीलंका से पाँच गुना, चेकोस्लोवाकिया से तीन गुना, इजराइल से सत्रह गुना, ब्रिटेन से (1.5 /2 गुना) है।
- जापान, कांगो रिपब्लिक, फिनलैंड और जर्मनी के क्षेत्रफल राजस्थान के क्षेत्रफल लगभग बराबर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान के तीन बड़े जिले –
  1. जैसलमेर 2. बीकानेर
  3. बाड़मेर

राजस्थान की स्थिति, विस्तार एवं आकृति

राजस्थान की ग्लोबीय स्थिति

अक्षांशीय स्थिति
अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है।)

देशांतरीय स्थिति
देशांतरीय दृष्टि से राजस्थान पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।)

- ग्लोब या विश्व के मानचित्र में राजस्थान की स्थिति उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) में है।
- राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय चतुर्भुजाकार या पतंगाकार है।
- इस आकृति के बारे में सर्वप्रथम 'टी.एच. हेंडले' ने बताया।

राजस्थान का अक्षांशीय एवं देशांतरीय विस्तार:–

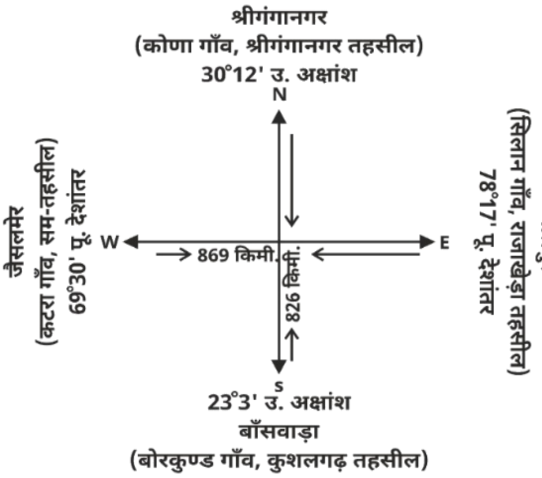

राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार:–

- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 23°03' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश तक है।
- राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार 7°9' अक्षांशों के मध्य है।
- राजस्थान की उत्तर से दक्षिण लम्बाई 826 किलोमिटर है।
- राजस्थान का उत्तरतम बिन्दु कोणा गाँव (श्रीगंगानगर) है।
- राजस्थान का दक्षिणतम बिन्दु बोरकुण्ड (बाँसवाड़ा) है।

राजस्थान का देशांतरीय विस्तार:–

- राजस्थान का देशान्तरीय विस्तार 69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशांतर तक है।
- राजस्थान का देशांतरीय विस्तार 8°47' देशांतरों के मध्य है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम चौड़ाई 869 किलोमीटर है।
- राजस्थान का पूर्वी बिन्दु सिलाना गाँव (धौलपुर) है।
- राजस्थान का पश्चिमी बिन्दु कटरा गाँव (जैसलमेर) है।
- कर्क रेखा $23\frac{1°}{2}$ उत्तरी अक्षांश, जिसे कर्क रेखा भी कहते है, यह राजस्थान के दक्षिणी भाग से निकलती है।
- कर्क रेखा भारत के आठ राज्यों गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा व मिजोरम से होकर गुजरती है।

राजस्थान का विस्तार:–

स्थलीय सीमा–

- राजस्थान की कुल स्थलीय सीमा 5,920 किलोमीटर है, जिसमें से 1,070 किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तथा 4,850 किलोमीटर अन्तर्राज्यीय सीमा है।

अन्तर्राष्ट्रीय सीमा–

- राजस्थान की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पाकिस्तान के साथ लगती है, जिसका नाम 'रेडक्लिफ रेखा' है।

रेडक्लिफ रेखा

- रेडक्लिफ रेखा एक कृत्रिम रेखा है।
- रेडक्लिफ रेखा भारत और पाकिस्तान के बीच निर्धारित की गई है।
- रेडक्लिफ लाइन का निर्धारण 17 अगस्त, 1947 को हुआ था।

- रेडक्लिफ रेखा पर भारत के 3 राज्य और 2 केन्द्र शासित प्रदेश स्थित हैं–

तीन राज्य–

1. पंजाब 2. राजस्थान
3. गुजरात

दो केन्द्र शासित प्रदेश–

1. जम्मू–कश्मीर 2. लद्दाख

- रेडक्लिफ लाइन की कुल लम्बाई 3,323 किलोमीटर है, जिसमें से राजस्थान के साथ 1,070 किलोमीटर की सीमा लगती है।
- इस अन्तर्राष्ट्रीय रेखा का नामकरण ब्रिटिश 'वकील सिरिल रेडक्लिफ' के नाम पर किया गया था।
- अन्तर्राष्ट्रीय रेखा की शुरुआत श्रीगंगानगर जिले के हिन्दूमल कोट से शुरू होकर बाड़मेर जिले के भागल गाँव (बाखासर) तक है। राजस्थान के 5 जिले अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पर स्थित हैं जो कि निम्नलिखित हैं–

1.	श्रीगंगानगर	210 किलोमीटर
2.	बीकानेर	168 किलोमीटर
3.	जैसलमेर	464 किलोमीटर
4.	बाड़मेर	228 किलोमीटर
5	फलोदी	-

- अन्तर्राष्ट्रीय–सीमा पर स्थित जिलों के अतिरिक्त सबसे नजदीक जिला–मुख्यालय श्रीगंगानगर तथा सबसे दूर धौलपुर है।
- रेडक्लिफ पर पाकिस्तान के 9 जिले स्थित हैं– पंजाब प्रान्त के 3 जिले बहावलनगर, बहावलपुर, रहीमयार खां जिले तथा सिंध प्रांत के 6 जिले घोटकी, सुक्कुर, खैरपुर, संघर, उमरकोट व थारपारकर राजस्थान के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।

अन्तर्राज्यीय–सीमा–

- राजस्थान राज्य की स्थलीय सीमा पाँच राज्यों के साथ लगती है।
- यह अन्तर्राज्यीय सीमा 4,850 किलोमीटर है।
- राजस्थान के उत्तर में पंजाब राज्य है।
- राजस्थान के उत्तर–पूर्व में हरियाणा राज्य है।
- राजस्थान के पूर्व में उत्तर प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पूर्व में मध्य प्रदेश राज्य है।
- राजस्थान के दक्षिण–पश्चिम में गुजरात राज्य है।

पंजाब राज्य–

- यह राजस्थान के साथ न्यूनतम सीमा 89 किलोमीटर बनाता है।
- पंजाब राज्य की सीमा पर स्थित राजस्थान के दो जिले हैं।
- श्रीगंगानगर पंजाब के साथ सर्वाधिक व हनुमानगढ़ न्यूनतम सीमा बनाता है।

हरियाणा राज्य–

- हरियाणा राज्य राजस्थान के साथ 1,262 किलोमीटर की सीमा बनाता है। हरियाणा के साथ राजस्थान के हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली - बहरोड, खैरथल – तिजारा, डीग, अलवर जिले सीमा बनाते हैं।

उत्तर प्रदेश राज्य–

- उत्तर प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 877 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- उत्तर प्रदेश के साथ राजस्थान के 3 जिले सीमा बनाते हैं–
  1. भरतपुर 2. धौलपुर 3. डीग
- उत्तर प्रदेश के दो जिलों की सीमाएँ राजस्थान के साथ लगती हैं– 1. मथुरा 2. आगरा

मध्य प्रदेश राज्य–

- मध्य प्रदेश राज्य राजस्थान के साथ 1,600 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- **राजस्थान के 10 जिले मध्य प्रदेश के साथ सीमा बनाते हैं–**
  1. धौलपुर 2. करौली
  3. सवाई माधोपुर 4. कोटा
  5. बाराँ 6. झालावाड़
  7. चित्तौड़गढ़ 8. भीलवाड़ा
  9. प्रतापगढ़ 10. बाँसवाड़ा।
- कोटा मध्य प्रदेश के साथ में दो बार सीमा बनाता है।

गुजरात राज्य–

- गुजरात राज्य राजस्थान के साथ 1,022 किलोमीटर की सीमा बनाता है।
- गुजरात के साथ राजस्थान के बाँसवाड़ा, डूँगरपुर, उदयपुर, जालोर, सिरोही, बाड़मेर जिले सीमा बनाते हैं।
- राज्य के सर्वाधिक निकट स्थित बंदरगाह कांडला बंदरगाह (गुजरात) है।
- राजस्थान के चार ऐसे जिले हैं जो दो–दो राज्यों के साथ सीमा बनाते हैं–
  1. हनुमानगढ़ – पंजाब व हरियाणा।
  2. डीग – हरियाणा व उत्तर प्रदेश।
  3. धौलपुर – उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश।
  4. बाँसवाड़ा – मध्य प्रदेश व गुजरात।
- राजस्थान के 2 जिले अन्तर्राज्यीय व अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर स्थित हैं–
  1. श्रीगंगानगर – पाकिस्तान व पंजाब।
  2. बाड़मेर – पाकिस्तान व गुजरात।
- कोटा एवं चित्तौड़गढ़ राजस्थान के वे जिले है जो एक ही राज्य के साथ 2 बार सीमा बनाते है।

संभागीय व्यवस्था

* संभागीय व्यवस्था की शुरुआत मनोनीत मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री जी ने 1949 में की।
* अप्रैल, 1962 में मोहनलाल सुखाडिया सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया।
* 26 जनवरी, 1987 को हरिदेव जोशी सरकार के द्वारा संभागीय व्यवस्था की शुरुआत दुबारा की गई तथा 1987 में जयपुर संभाग से अलग होकर नया संभाग राजस्थान का छठा संभाग अजमेर को बनाया गया।
* 4 जून, 2005 को वसुंधरा सरकार द्वारा राजस्थान का 7वां संभाग भरतपुर को बनाया गया।

गहलोत सरकार का कदम (2022-2023):

- **नये जिलों की घोषणा –** 17 मार्च, 2023
- **समिति - रामलुभाया समिति**
- **जिलों की संख्या:** राज्य में जिलों की संख्या 33 से बढ़ाकर 50 की गई।

- **संभागों की संख्या:** राज्य में संभागों की संख्या 7 से बढ़ाकर 10 कर दी गई।
- **अधिसूचना जारी:** इस निर्णय की अधिसूचना 4 अगस्त, 2023 को जारी की गई और यह 7 अगस्त, 2023 से प्रभावी हो गया।
- इस बदलाव से राजस्थान के प्रशासनिक ढांचे में बड़ा बदलाव आया, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में प्रशासनिक सुविधाओं का विस्तार हुआ।

भजनलाल सरकार का कदम (2024):

- **नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा:** 28 जून, 2024 को भजनलाल सरकार ने नवगठित जिलों और संभागों की समीक्षा के लिए जिला रिव्यू कमेटी का गठन किया।
- **कमेटी का गठन:** इस कमेटी की अध्यक्षता ललित के. पंवार द्वारा की गई और इसमें वित्त सचिव, ग्रामीण विकास पंचायतीराज, गृह विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव और राजस्व सचिव शामिल थे।

मंत्रिमण्डलीय उपसमिति का गठन (2024):

- **अध्यक्ष:** उपमुख्यमंत्री प्रेमचंद बैरवा को उपसमिति का अध्यक्ष बनाया गया। लेकिन, बाद में वे संयोजक पद से इस्तीफा दे गए।
- **संयोजक:** शिक्षा मंत्री मदन दिलावर को 18 सितंबर, 2024 को उपसमिति का संयोजक नियुक्त किया गया।
- **अन्य सदस्य:** कर्नल राज्यवर्द्धन सिंह राठौड़, कन्हैयालाल चौधरी, हेमन्त मीणा और सुरेश सिंह रावत को उपसमिति का सदस्य बनाया गया।

कैबिनेट की नई घोषणा (2024):

- **नवगठित संभागों को निरस्त किया:** 28 दिसंबर, 2024 को राजस्थान सरकार की कैबिनेट ने बाँसवाड़ा, सीकर और पाली संभागों को निरस्त कर दिया।
- **नए जिलों को निरस्त किया:** कैबिनेट ने 9 जिलों को भी निरस्त करने का निर्णय लिया, जिनमें अनूपगढ़, दूदू, गंगापुरसिटी, जयपुर ग्रामीण, जोपुर ग्रामीण, केकड़ी, नीम का थाना, सांचौर और शाहपुरा शामिल थे।
- **अधिसूचना जारी:** इस निर्णय की अधिसूचना 29 दिसंबर, 2024 को जारी की गई, जिसमें राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 के तहत आवश्यक प्रक्रिया पूरी की गई।
- **नवीन प्रशासनिक ढांचा:** अब वर्तमान में राज्य में 7 संभाग और 41 जिले है।

संभागों का पुनर्गठन (29 दिसंबर 2024 को जारी अधिसूचना)

क्र. सं.	संभाग का नाम	जिले संख्या	पुनर्गठन के पश्चात् संभागवार जिलों के नाम
1	जयपुर	7 जिले	1. जयपुर, 2. सीकर, 3. कोटपूतली-बहरोड़, 4. दौसा, 5. खैरथल-तिजारा, (भर्तृहरी नगर) 6. अलवर, 7. झुंझुनूं
2	बीकानेर	4 जिले	1. बीकानेर, 2. श्रीगंगानगर, 3. हनुमानगढ़, 4. चूरू
3	अजमेर	6 जिले	1. अजमेर, 2. ब्यावर, 3. भीलवाड़ा, 4. टोंक, 5. नागौर, 6. डीडवाना-कुचामन
4	भरतपुर	5 जिले	1. भरतपुर, 2. धौलपुर, 3. करौली, 4. डीग, 5. सवाई माधोपुर
5	कोटा	4 जिले	1. कोटा, 2. बूंदी, 3. बारां, 4. झालावाड़
6	जोधपुर	8 जिले	1. जोधपुर, 2. फलौदी, 3. जैसलमेर, 4. बाड़मेर, 5. पाली, 6. सिरोही, 7. बालोतरा, 8. जालोर
7	उदयपुर	7 जिले	1. उदयपुर, 2. चित्तौड़गढ़, 3. प्रतापगढ़, 4. राजसमंद, 5. बांसवाड़ा, 6. डूंगरपुर, 7. सलूम्बर

राजस्थान के जिले

- वर्तमान में राजस्थान में 41 जिले हैं।
- राजस्थान के माननीय मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने नये जिलों की घोषणा की है जिससे राजस्थान में जिलों की संख्या 41 हो गयी है।
- एकीकरण के समय सबसे अन्त में सम्मिलित होने वाला जिला अजमेर था, जिसे 26 वें जिले के रूप में मान्यता मिली।
- 27 वाँ जिला धौलपुर 15 अप्रैल, 1982 को बना।
- 28 वाँ जिला बाराँ 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 29 वाँ जिला दौसा 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 30 वाँ जिला राजसमन्द 10 अप्रैल, 1991 को बना।
- 31 वाँ जिला हनुमानगढ़ 12 जुलाई, 1994 को बना।
- 32 वाँ जिला करौली 19 जुलाई, 1997 को बना।
- 33 वाँ जिला प्रतापगढ़ 26 जनवरी, 2008 को बना।

राजस्थान के जिलों की आकृतियां

- अजमेर – त्रिभुजाकार
- चित्तौड़ – घोड़ की नाल के समान
- भीलवाड़ा – लगभग आयताकार
- सीकर – प्यालाकार/अर्द्धचंद्राकार
- जोधपुर – ऑस्ट्रेलिया/मयूराकार
- जैसलमेर – अनियमित बहुभुज
- बाड़मेर – लगभग भारत जैसा
- दौसा – धनुषाकार
- टोंक – पतंगाकार/चतुर्भुजाकार
- करौली – बतखाकार

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान के जिलों में किसकी सीमा पाकिस्तान से नहीं लगती है?

(a) श्रीगंगानगर (b) जोधपुर
(c) जैसलमेर (d) बाड़मेर

2. राजस्थान के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?

(a) इसका आकार विषमकोण चतुर्भुज के समान है।
(b) इसका उत्तर से दक्षिण विस्तार 869 किमी. है।
(c) इसकी स्थलीय सीमा 6920 किमी. है।
(d) इसका क्षेत्रफल 3,42,329 वर्ग किमी. है।

3. रेडक्लिफ रेखा का राजस्थान में विस्तार है-
(a) हिन्दुमलकोट (गंगानगर) से बाखासर (बाड़मेर) तक
(b) कोणागाँव (गंगानगर) से शाहगढ़ (जालौर) तक
(c) हिन्दुमलकोट (गंगानगर) से शाहगढ़ (जालौर) तक
(d) कोणागाँव (गंगानगर) से बाखासर (बाड़मेर) तक

4. निम्नलिखित में से किस जिले में अन्तर्राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सीमा दोनों हैं?
(a) हनुमानगढ़
(b) बाड़मेर
(c) जालौर
(d) बीकानेर

5. राजस्थान का उत्तर से दक्षिण एवं पूर्व से पश्चिम विस्तार क्रमश: है–
(a) 850 और 784 किलोमीटर
(b) 826 और 784 किलोमीटर
(c) 826 और 869 किलोमीटर
(d) 869 और 850 किलोमीटर

6. फलोदी जिले का सीमांकन किस जिलों से बनाया गया?
(a) जोधपुर व नागौर
(b) जैसलमेर व बाड़मेर
(c) जोधपुर व बाड़मेर
(d) जोधपुर व जैसलमेर

7. राजस्थान की आकृति विषम चतुष्कोणीय/पतंगाकार है। यह सर्वप्रथम किसने बताया?
(a) कर्नल जेम्स टॉड
(b) जसर्ज थॉमस
(c) टी.एच. हैडले
(d) विलियम फ्रेंकलिन

8. निम्नलिखित में से राजस्थान के किन जिलों की सीमा रेखा गुजरात से नहीं मिलती है?
1. सिरोही **2. डूँगरपुर**
3. प्रतापगढ़ **4. बाँसवाड़ा**
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग करते हुए सही उत्तर की पहचान कीजिए–
(a) 1, 2, 3 तथा 4 (b) 1, 2 तथा 3
(c) 1, 2 तथा 4 (d) केवल 3

9. राजस्थान में निम्नलिखित जिला जो उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश के साथ संयुक्त सीमा निर्धारित करता है–
(a) हनुमानगढ़
(b) भरतपुर
(c) धौलपुर
(d) बाँसवाड़ा

10. राजस्थान के उत्तर से दक्षिण तथा पूर्व से पश्चिम विस्तार में अन्तर है-
(a) 41 किमी. (b) 42 किमी.
(c) 40 किमी. (d) 43 किमी.

11. भारत में राजस्थान की भौगोलिक स्थिति है-
(a) उत्तर पश्चिमी भाग
(b) दक्षिण पश्चिमी भाग
(c) उत्तर पूर्वी भाग
(d) दक्षिण पूर्वी भाग

12. कुल भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में राजस्थान का स्थान है?
(a) प्रथम
(b) द्वितीय
(c) तृतीय
(d) चतुर्थ

13. निम्न में से राजस्थान के किस जिले की अंतर्राष्ट्रीय सीमा सबसे बड़ी है?
(a) जैसलमेर
(b) बीकानेर
(c) बाड़मेर
(d) गंगानगर

14. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य सर्वाधिक क्षेत्रफल वाला है?
(a) मध्य प्रदेश
(b) उत्तर प्रदेश
(c) राजस्थान
(d) महाराष्ट्र

ANSWER KEY				
1. [b]	2. [a]	3. [a]	4. [b]	5. [c]
6. [d]	7. [c]	8. [d]	9. [c]	10.[d]
11. [a]	12. [a]	13. [a]	14. [c]	

♦♦♦♦

राजस्थान की
कला एवं संस्कृति

प्रमुख दुर्ग

- **शुक्र नीति** - राज्य को मानव शरीर का अंग मानते हुए शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग को शरीर के प्रमुख अंग **'हाथ'** की संज्ञा दी गई है।
- शुक्र नीति के अनुसार **सैन्य दुर्ग सर्वश्रेष्ठ** श्रेणी का **दुर्ग** है।

शुक्र नीति के अनुसार दुर्ग 9 श्रेणियों के होते हैं-

1. **गिरी दुर्ग –** पहाड़ी पर निर्मित दुर्ग। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में निर्मित है।
   उदाहरण - मेहरानगढ़(जोधपुर), तारागढ़(अजमेर)।
2. **एरण दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जहाँ तक पहुँचने का मार्ग कठिन और दुर्गम हो।
   उदाहरण - चित्तौडगढ़ और जालौर दुर्ग।
3 **वन दुर्ग –** घने जंगलों में निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - सिवाना का दुर्ग।
4. **धान्वन दुर्ग –** समतल सतह पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - जैसलमेर का दुर्ग।
5. **जल दुर्ग –** नदियों के संगम स्थल पर निर्मित दुर्ग।
   उदाहरण - गागरोण दुर्ग।
6. **पारिख दुर्ग –** चारों तरफ गहरी खाई युक्त दुर्ग।
   उदाहरण- भरतपुर दुर्ग, जूनागढ़ दुर्ग।
7. **पारिध दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसके चारों तरफ परकोटा हो।
   उदाहरण- चित्तौडगढ़, जैसलमेर दुर्ग।
8. **सैन्य दुर्ग –** ऐसा दुर्ग जिसमें सैनिक निवास करते हो।
9. **सहाय दुर्ग –** जहाँ सैनिक व आमजन दोनों निवास करते हो।

- राजस्थान में महाराष्ट्र एवं मध्य प्रदेश के पश्चात् सर्वाधिक दुर्गों का निर्माण हुआ है।
- राजस्थान में दुर्गों के स्थापना का विकास का प्रथम आधार **कालीबंगा की खुदाई** में मिलता है।

कौटिल्य के अनुसार दुर्ग की 4 श्रेणियाँ है-

- 1. औदुक दुर्ग 2. पर्वत दुर्ग
  3. धान्वन दुर्ग 4. वन दुर्ग
- **चित्तौड़ दुर्ग** धान्वन श्रेणी के दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी का दुर्ग है।

राजस्थान के 6 दुर्ग यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल -

- 1. आमेर दुर्ग 2. गागरोण दुर्ग
  3. कुम्भलगढ़ दुर्ग 4. जैसलमेर दुर्ग
  5. रणथम्भौर दुर्ग 6. चित्तौड़गढ़ दुर्ग।
- ये दुर्ग **जून, 2013** में नोमपेन्ह (कम्बोडिया) में हुई वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की बैठक में यूनेस्को साइट की सूची में शामिल किए गये।

राजस्थान के प्रसिद्ध दुर्ग-

- राजस्थान का सबसे प्राचीन दुर्ग – भटनेर (हनुमानगढ़)
- मिट्टी से निर्मित दुर्ग –
  1. लोहागढ़ दुर्ग 2. भटनेर दुर्ग
- **राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग –**
  1. मोहनगढ़ (जैसलमेर) 2. लोहागढ़ (भरतपुर)
- सर्वाधिक आक्रमण झेलने वाला दुर्ग – तारागढ़ (अजमेर)
- सर्वाधिक विदेशी आक्रमण वाला दुर्ग – भटनेर दुर्ग
- सर्वाधिक गहराई में स्थित दुर्ग – लोहागढ़
- सर्वाधिक बुर्जों वाला किला – सोनारगढ़

सोनारगढ़/जैसलमेर का किला

- जैसलमेर के सोनारगढ़ के नाम से प्रसिद्ध दुर्ग की नींव **जैसल भाटी** ने 1155 ई. में रखी।
- इस दुर्ग का निर्माण शालिवाहन द्वितीय ने पूर्ण करवाया।
- **उपनाम -** सोनगढ़, गौहरारगढ़, त्रिकूटगढ़ एवं 'उत्तर भड़ किवाड़'।
- **प्रकार -** धान्वन श्रेणी का दुर्ग।
- यह त्रिकुट पहाड़ी पर त्रिभुजाकार आकृति में निर्मित है।
- पीले पत्थरों से निर्मित यह किला **राजस्थान का दूसरा बड़ा आवासीय किला है**।
- सोनारगढ़ दुर्ग का निर्माण **चूने का प्रयोग किए बिना पत्थरों को जोड़कर** किया गया है।
- जैसलमेर दुर्ग विश्व का एकमात्र दुर्ग है जिसकी **छत लकड़ी की** बनी हुई है।
- सोनारगढ़ किले का **प्रवेश द्वार अक्षयपोल** कहलाता है।
- सोनारगढ़ किले के पास ही **गढ़ीसर/घडसीसर झील** स्थित है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

(1) **99 बुर्ज-** यह दुर्ग **सर्वाधिक बुर्जों वाला (99 बुर्जे)** किला है।
(2) **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर-** इस दुर्ग का प्रमुख मंदिर **लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर** है, जिसमें जैसलमेर शासकों के आराध्य देव की मूर्ति मेड़ता से लाई गई।
(3) इस दुर्ग का प्राचीन मंदिर **आदिनाथ जी (जैन मंदिर)** का है।
(4) जैसलु कुआँ
(5) कमरकोट (घाघरानुमा परकोटा)
(6) **जिनभद्र सूरी भंडार -** यहाँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ रखे हुए है।
(7) **शीश महल -** दुर्ग में महारावल अखैसिंह द्वारा निर्मित सर्वोत्तम विलास।

ढाई साके-:

- जैसलमेर दुर्ग ढाई साकों के लिए प्रसिद्ध है।
- **प्रथम साका -** जैसलमेर का प्रथम साका भाटी शासक **मूलराज द्वितीय और अलाउद्दीन खिलजी** के मध्य 1312 ई. में हुआ, इसमें मूलराज द्वितीय के नेतृत्व में केसरिया हुआ।
- **दूसरा साका -** जैसलमेर का दूसरा साका **रावल दूदा और दिल्ली के फिरोजशाह तुगलक** के मध्य 1370-71 ई. में हुआ।
- **तीसरा अर्द्ध साका** - 1550 ई. में जैसलमेर शासक राव **लूणकरण और कंधार शासक अमीर अली** के मध्य हुआ। इसमें वीरों ने केसरिया तो किया लेकिन जौहर नहीं हुआ, इसलिए इसे अर्द्ध साका कहा।
- **अबुल फजल** ने इस दुर्ग के बारे में कहा कि **"घोड़ा कीजे काठ का पग किजे पाषाण शरीर राखे बखतरबंद ते पहुँचे जैसाण।"**

नोट-

- राजस्थान इतिहास का यह **एकमात्र अर्द्ध साका** हुआ।
- राजस्थान के इस दुर्ग को **यूनेस्को** ने वर्ष 2013 में **विश्व विरासत** में शामिल किया।
- फिल्म निर्देशक **सत्यजीत रे** द्वारा इस दुर्ग पर '**सोनार किला फिल्म**' का निर्माण किया गया।
- दूर से देखने पर यह दुर्ग पहाड़ी पर **"लंगर डाले एक जहाज का आभास"** कराता है।

भटनेर दुर्ग (हनुमानगढ़)

- इस दुर्ग का निर्माण तीसरी सदी के अन्त (295 ई.) में **भूपत भाटी** द्वारा **सरस्वती या घग्घर नदी** के तट पर करवाया गया था।
- इस दुर्ग का अन्य नाम **'उत्तरी सीमा का प्रहरी'** है।
- **वास्तुकार -** कैकेया।
- **श्रेणी -** धान्वन दुर्ग।
- इस दुर्ग में **52** विशाल बुर्ज हैं।
- किले का निर्माण पक्की हुई ईटों और चूने से हुआ था।
- भटनेर दुर्ग राजस्थान का **सबसे प्राचीन दुर्ग** है।
- भटनेर दुर्ग पर **सबसे अधिक विदेशी आक्रमण** हुए।
- 1003 ई. में **महमूद गजनवी** का प्रथम विदेशी आक्रमण हुआ तथा अंतिम विदेशी आक्रमण 1532-34 ई. का **कामरान** का हुआ।
- यह दुर्ग राजस्थान का एकमात्र ऐसा दुर्ग है जहाँ पर **मुस्लिम महिलाओं ने जौहर** किया। यह जौहर 1398 ई. में हुआ था। उस समय भटनेर का शासक **दूलचंद** था और आक्रमण **तैमूर लंग** का हुआ।
- इस जौहर का प्रमाण तैमूर लंग की आत्मकथा **'तुजुक ए तैमुरी'** में मिलता है।
- **1805 ई.** में बीकानेर शासक **सूरतसिंह** ने भटनेर शासक **जावतासिंह भट्टी** को मंगलवार के दिन पराजित कर इसका नामकरण **हनुमानगढ़** किया।
- इस दुर्ग में बलबन के किलेदार '**शेर खाँ की कब्र**' है।
- भटनेर दुर्ग में एक प्रवेशद्वार पर एक राजा के साथ **6** नारियों की आकृतियाँ बनी हैं।

जूनागढ़ (बीकानेर)

- **निर्माण -** 1589-94 ई. में **रायसिंह** के द्वारा करवाया गया।
- यह किला राती घाटी में '**बीका की टेकरी**' के ऊपर निर्मित दुर्ग है।
- जूनागढ़ का दुर्ग '**धान्वन दुर्ग**' की श्रेणी में आता है।

उपनाम- जमीन का जेवर, लालगढ़, रातीघाटी का किला।

- यह दुर्ग **सूरसागर झील के किनारे** स्थित है।
- **दुर्ग की आकृति -** चतुष्कोण या चतुर्भुजाकृति।

प्रवेश द्वार -:

- **बाहरी -** कर्णपोल एवं चाँदपोल।
- **भीतरी -** दौलतपोल, फतेहपोल, रतनपोल, सूरजपोल एवं ध्रुवपोल।
- सूरज पोल पर **राजा रायसिंह की प्रशस्ति** उत्कीर्ण है। (**प्रशस्ति रचयिता- जैता**)
- **मुख्य द्वार सूरज पोल** पर गजारूढ़ '**जयमल व फत्ता**' की मूर्तियाँ स्थित है, जो मेवाड़ के महाराणा उदयसिंह के सेनापति थे।

दुर्ग के दर्शनीय स्थल :-

(1) अनूप संग्रहालय (2) फूल महल
(3) चन्द्र महल (4) लाल निवास
(5) छत्र महल (6) गंगा निवास महल
(7) दलेल निवास महल (8) रतन निवास महल।
(9) **दुर्ग में दो कुएँ** - रामसर एवं रानीसर।
(10) 33 **करोड़ देवी-देवताओं का मंदिर -** यहाँ सिंह पर सवार गणपति (हेरंब गणपति) की दुर्लभ प्रतिमा है।
(11) जूनागढ़ के दुर्ग में **नागणेची माता व लक्ष्मीनारायण जी** का मंदिर है। लक्ष्मीनारायण जी का मंदिर जूनागढ़ का आकर्षक मंदिर है, इसका **निर्माण रतनसिंह** ने करवाया।

- राजस्थान में पहली बार लिफ्ट इसी दुर्ग में लगाई थी।
- **जूनागढ़ दुर्ग के सम्बन्ध में दीनानाथ दुबे की उक्ति** – **'दीवारों के भी कान होते है पर जूनागढ़ के महलों की दीवारें तो बोलती हैं।'**
- यह दुर्ग वास्तव में आगरा के दुर्ग से मिलता-जुलता है।

मेहरानगढ़ दुर्ग (जोधपुर)

- **निर्माण -**1459 ई. में राव जोधा द्वारा करवाया गया।
- दुर्ग की **नींव करणी माता** (रिद्धि बाई) ने रखी।
- **इस दुर्ग की श्रेणी** – गिरि दुर्ग।
- **अवस्थिति -** पंचेटिया पहाड़ी/चिड़िया टुक पहाड़ी पर स्थित है।
- **उपनाम-** कागमुखीगढ़, मयूरध्वज गढ़, जोधा की ढाणी, सूर्यगढ़, गढ़ चिंतामणि, मारवाड़ का सिरमौर।
- इस दुर्ग की नींव में **राजाराम जी मेघवाल** को जीवित चुना गया।
- **प्रवेश द्वार -**
  (**1**) **जयपोल** – उत्तर-पूर्व में मानसिंह द्वारा **1808** ई. में निर्मित।
  (**2**) **फतेहपोल** – दक्षिण-पश्चिम में अजीतसिंह द्वारा **1707** ई. में निर्मित।
  (3) **अन्य प्रवेश द्वार** - ध्रुव पोल, सुरज पोल, इमरत पोल तथा भैरों पोल।
- **मेहरानगढ़ की मुख्य तोपें -** किलकिला, गजनी, शम्भूबाण, गजक, गुब्बार जनजमा, कड़क, बिजली आदि।
- मेहरानगढ़ दुर्ग में पेयजल स्रोतों में **रानीसर तथा पदमसर** तालाब है।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-:

प्रमुख महल- दुर्ग के भीतर फ़तेह महल, फूल महल, शृंगार चंवरी महल, मोती महल स्थित हैं। इनमें फूल महल (अभयसिंह द्वारा निर्मित) मेहरानगढ़ का सबसे आकर्षक महल है।

मंदिर:

(1) **चामुण्डा माता का मंदिर-** मेहरानगढ़ दुर्ग में राठौड़ राजवंश की आराध्य देवी **चामुण्डा माता का मंदिर** है, जिसका निर्माण **राव जोधा** द्वारा करवाया गया। 2008 **वर्ष में चामुण्डा मंदिर में भगदड़ मच जाने से कई लोग मारे गये इसकी जाँच हेतु जसराज चोपड़ा कमेटी का गठन किया गया।**
(2) **मुरली मनोहर मंदिर**
(3) **आनंदघनजी मंदिर**
(4) **राठौड़ों की कुलदेवी नागणेची जी का मंदिर**

अन्य दर्शनीय स्थल-:

- **मामा-भान्जा (धन्ना और भींवा) -** यह छतरी मेहरानगढ़ दुर्ग में लौहा पोल द्वार के पास है। यह **10** खम्भों की छतरी है।
- भूरे खाँ की मजार इसी दुर्ग में है।
- **पुस्तक प्रकाश पुस्तकालय -** इस दुर्ग में महाराजा मानसिंह द्वारा स्थापित पुस्तकालय।
- **वीर कीरतसिंह सोढ़ा** की छतरी इसी दुर्ग में है।
- **श्रृंगार चौकी -** महाराजा तख्तसिंह द्वारा दौलत खाने के आँगन में निर्मित चौकी, जहाँ जोधपुर के राजाओं का राजतिलक होता था।
- **जल स्रोत-** दुर्ग में **राणीसर एवं पद्मसर** तालाब जल के मुख्य स्रोत है। राणीसर तालाब का निर्माण राव जोधा की रानी जसमा हाड़ी ने करवाया था।
- दुर्ग में स्थित संग्रहालय में अकबर की तलवार रखी हुई है।
- इस दुर्ग के बारे में **रुडयार्ड क्लिपिंग** ने कहा कि **"इसका निर्माण तो परियों व फरिश्तों ने करवाया।"**
- जैकलीन कैनेडी ने इस दुर्ग को 'दुनिया का आठवाँ अजुबा' कहा।
- राजस्थान का प्रथम दुर्ग जिसमें '**ऑडियो गाइड टूर**' की सुविधा है।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- **निर्माण-** चित्तौड़गढ़ दुर्ग के निर्माता चित्रांगद मौर्य (8वीं सदी में निर्मित) थे। (प्रसिद्ध ग्रंथ **'वीर विनोद'** के अनुसार)
- **उपनाम –** दुर्गों का सिरमौर, राजस्थान का गौरव, मालवा का प्रवेश द्वार, दक्षिणी सीमा का प्रहरी, त्याग व बलिदान का दुर्ग।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग **राजस्थान का सबसे बडा लिविंग फोर्ट** है।
- राजस्थान का **एकमात्र दुर्ग जिसमें खेती** होती है।
- **आकृति -** व्हेल मछली के समान।
- यह दुर्ग चित्तौड़ में **गंभीरी और बेड़च नदियों** के संगम पर स्थित है।
- **श्रेणी एवं पठार- 616** मीटर ऊँचे मेसा पठार पर निर्मित गिरि दुर्ग। यह दुर्ग 'धान्वन दुर्ग' को छोड़कर शेष सभी **8** श्रेणियों में रखा जा सकता है।
- यह दुर्ग राजस्थान के किलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा दुर्ग है। **(**क्षेत्रफल **– 28** वर्ग किमी.**)**
- यह दिल्ली-मालवा मार्ग पर अवस्थित है।
- **प्रथम विदेशी आक्रमण -** मामू अफगान का।
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के बारे में **अबुल फजल** ने कहा कि **"गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढैया"**
- **7 प्रवेश द्वार**:- पाडन पोल (मुख्य व पहला प्रवेश द्वार), भैरव पोल, हनुमान पोल, गणेश पोल, जोड़ला पोल, लक्ष्मण पोल, रामपोल।

चित्तौड़गढ़ दुर्ग तीन साके हुए –

1. प्रथम साका

- राजस्थान इतिहास का सबसे बड़ा साका **1303 ई.** में रावल रतनसिंह और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ।
- इस साके में रानी पद्मिनी ने जौहर किया।
- चित्तौड़गढ़ में प्रतिवर्ष चैत्र मास में जौहर मेला लगता है।

2. दूसरा साका

- दूसरा साका **1534 ई.** में गुजरात के शासक बहादुरशाह और रावल बाघसिंह के बीच हुआ।
- इस साके में जौहर रानी कर्मावती ने किया।

3. तीसरा साका

- तीसरा साका **1567-68 ई.** में मुगल बादशाह अकबर व फतेहसिंह सिसोदिया के बीच हुआ। इस साके में जौहर फूल कँवर ने किया।

प्रमुख दर्शनीय स्थल-

प्रमुख मंदिर-

- मीरा मंदिर, तुलजा भवानी मंदिर, कालिका माता का मंदिर, श्याम पार्श्वनाथ मंदिर, समद्धिश्वर मंदिर, कुम्भ श्याम मंदिर, सतबीश देवरी जैन मंदिर, शृंगार चंवरी जैन मन्दिर।

कीर्तिस्तम्भ/जैन प्रशस्ति-

- इसका निर्माण जैन व्यापारी जीजाशाह द्वारा करवाया गया है। कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति की रचना **कवि अत्रि** तथा बाद में **महेश** द्वारा पूरी की गई।
- **विजय स्तम्भ** - दुर्ग के भीतर विजय स्तम्भ भव्य इमारत है।
- **उपनाम-** 'विष्णु स्तंभ' व 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश।
- **निर्माण-** कुंभा ने **1437** ई. में '**सारंगपुर युद्ध**' में महमूद खिलजी प्रथम को पराजित किया, इस विजय के उपलक्ष्य में विजय स्तम्भ का निर्माण महाराणा कुम्भा द्वारा **1440** ई. से **1448** ई. करवाया गया।
- यह **9** मंजिला इमारत है जो **30** फीट चौड़ा और **122** फीट ऊँचा है। इसमें कुल **157** सीढ़ियाँ हैं। इसकी तीसरी मंजिल पर **9** बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- **सी. वी. वैद्य** ने इसे '**विष्णु स्तंभ**' कहा है तथा **उपेंद्र नाथ डे** ने इसे '**विष्णु ध्वज**' कहा है।
- **गोपीनाथ शर्मा** ने इसे '**लोक जीवन का रंगमंच**' कहा है तथा **आर. पी. व्यास** ने इसे '**हिंदू प्रतिमा शास्त्र की अनुपम निधि**' कहा है।
- **महाराणा स्वरूप सिंह** के समय इसका **जीर्णोद्धार** करवाया गया। फर्ग्यूसन ने इसकी तुलना **'टार्जन टावर**' (**इंग्लैंड**) से की है।
- इसे बनाने की प्रेरणा **बयाना के विष्णु स्तंभ** से मिली।
- **जलापूर्ति के स्रोत -** रत्नेश्वर तालाब, कुम्भसागर, गोमुख झरना, हाथीकुण्ड, भीमलत तालाब, झालीबाव तालाब।

अन्य दर्शनीय स्थल-

- फतह प्रकाश महल।
- कल्ला राठौड़ की छतरी (4 खम्भों की छतरी)।
- लाखोटा की बारी **:-** चित्तौड़ दुर्ग की उत्तरी खिड़की।
- रावत बाघसिंह का स्मारक।
- नवलखा बुर्ज (बनवीर द्वारा निर्मित लघु दुर्ग)।

कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद)

- **निर्माण-** इस दुर्ग का निर्माण **महाराणा कुम्भा** ने **1448-1458** ई. में मौर्य शासक सम्प्रति द्वारा निर्मित एक प्राचीन दुर्ग के ध्वंसावशेषों पर **शिल्पी मंडन** की देखरेख में करवाया था।
- **श्रेणी-** मेवाड़ – मारवाड़ सीमा पर राजसमन्द जिले में स्थित **गिरि दुर्ग।**

राजस्थान का इतिहास

राजस्थान के इतिहास के स्त्रोत

01

राजस्थान के इतिहास का परिचय

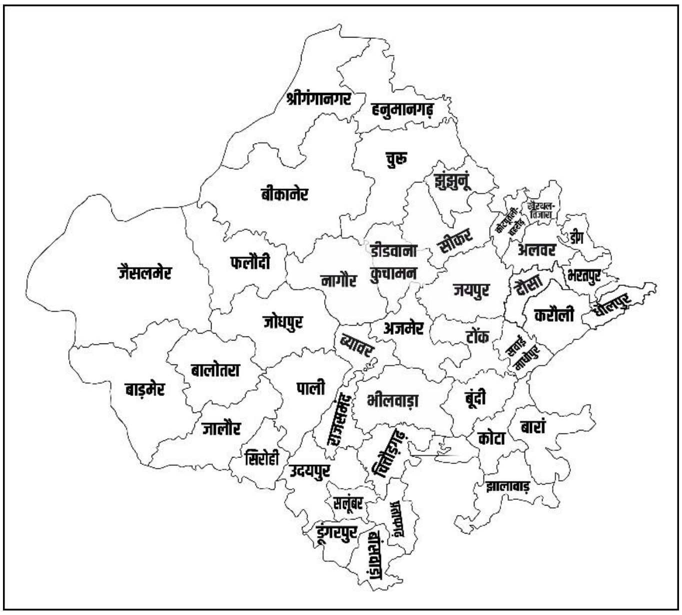

- **वर्ष 1949** से पहले **"राजस्थान"** नाम की कोई भौगोलिक इकाई अस्तित्व में नहीं थी।
- **वर्ष 1800** में **जॉर्ज थॉमस** ने इस भू-भाग के लिए **"राजपूताना"** शब्द का प्रयोग किया।
- **वर्ष 1829** में **कर्नल जेम्स टॉड** ने अपनी पुस्तक **"एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान"** में इसे **"रायथान"** या **"राजस्थान"** नाम दिया।
- स्वतंत्रता के बाद जब विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ, तो **30 मार्च, 1949** को इस क्षेत्र का नाम **"राजस्थान"** रखा गया। राजस्थान का नामकरण विभिन्न राजवंशों और उनकी परंपराओं के साथ-साथ क्षेत्र की ऐतिहासिक पहचान को भी समेटता है।

प्राचीनतम नाम और उनके विवरण-

- **मरु और धन्व-** जोधपुर संभाग के मरुस्थल के लिए प्रयुक्त होते थे। जोधपुर को पहले **"मरू" और "मरूवार"** कहा जाता था और बाद में इसे "मारवाड़" कहा गया।
- **जांगल-** इस नाम का प्रयोग उन क्षेत्रों के लिए किया गया, जहां शमी, कैर या पीलू होते थे। बीकानेर और नागौर का क्षेत्र "जांगल देश" कहलाता था।

भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नामित क्षेत्र-

- **कांठल-** माही नदी के किनारे स्थित प्रतापगढ़ का भू-भाग।
- **छप्पन का मैदान-** प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा के मध्य, जहां 56 गाँवों का समूह था।
- **ऊपरमाल-** भैंसरोडगढ़ से बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र।
- **गिरवा-** उदयपुर के आस-पास का पहाड़ी क्षेत्र।

अन्य प्राचीन नाम-

- **माँड-** जैसलमेर का प्राचीन नाम।
- **बागड़-** डूंगरपुर और बाँसवाड़ा का क्षेत्र।
- **हाड़ौती-** कोटा और बूंदी के त्रिकोण का प्रदेश।
- **शेखावाटी-** सीकर, झुंझुनूं और चूरू का क्षेत्र।

राजस्थान के प्रमुख शिलालेख

- उत्कीर्ण अभिलेखों के अध्ययन को 'एपीग्राफी' (पुरालेखशास्त्र) कहा जाता है।
- अभिलेखों एवं दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन लिपि का अध्ययन 'पेलियोग्राफी' (पुरालिपिशास्त्र) कहलाता है।
- भारतीय लिपियों पर पहला वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने किया। श्री ओझा ने भारतीय लिपियों पर 'भारतीय प्राचीन लिपिमाता' पुस्तक की रचना की।
- **शिलालेख/अभिलेख -** शिलालेख या अभिलेख वे लिखित सामग्री होती है, जो पत्थर की शिलाओं, दीवारों, स्तम्भों आदि पर अंकित होती है।
- **प्रशस्ति -** जब किसी शिलालेख में किसी शासक की उपलब्धियों और उनकी महानता का बखान किया जाता है, तो उसे प्रशस्ति कहा जाता है।
- **भारत में संस्कृत भाषा का प्रथम अभिलेख-** शक शासक रूद्रदामन का 'जूनागढ़ अभिलेख' (गुजरात)।

नांदसा यूप-स्तम्भ लेख (225 ई.)

- भीलवाड़ा जिले में स्थित इस यूप-स्तम्भ की स्थापना 225 ई. में की गई थी। इस लेख से पता चलता है कि शक्तिगुणगुरु नामक व्यक्ति ने यहाँ षष्ठिरात्र (छः रातों में सम्पन्न) यज्ञ किया था। इस स्तम्भ की स्थापना पश्चिमी (शक) क्षत्रपों के राज्य-काल में सोम द्वारा की गई थी।

घोसुण्डी शिलालेख (द्वितीय शताब्दी ई.पू.)

- यह शिलालेख चित्तौड़ से सात मील दूर घोसुण्डी गाँव से प्राप्त हुआ था। इस लेख की भाषा संस्कृत है और लिपि ब्राह्मी है।
- इस लेख में उल्लेख है कि गजवंश के पाराशरी के पुत्र सर्वतात ने यहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था। शिलालेख में द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण तथा वासुदेव की मान्यता और अश्वमेध यज्ञ के प्रचलन का वर्णन मिलता है।
- घोसुण्डी शिलालेख को सर्वप्रथम डॉ. भंडारकर ने पढ़ा था।
- वर्तमान में यह शिलालेख उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है।

बड़वा यूप-स्तम्भ लेख (238-39 ई.)

- यह लेख बारां जिले के बड़वा नामक स्थान से प्राप्त कुल 3 यूप स्तम्भों में से एक पर उत्कीर्ण है। इस लेख में मौखरी वंश के शासकों का सर्वप्रथम उल्लेख किया गया है।
- इसमें त्रिरात्र यज्ञों का उल्लेख है, जिन्हें मौखरी महासेनापति बल के तीन पुत्रों — बलवर्धन, सोमदेव और बलसिंह ने संपन्न किया था। इस शिलालेख की भाषा संस्कृत व लिपि ब्राह्मी है।

गंगधार का लेख (423 ई.)

- यह लेख झालावाड़ जिले में गंगधार नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसकी भाषा संस्कृत है। इस लेख के अनुसार राजा विश्वकर्मा के मंत्री मयूराक्ष ने एक विष्णु मन्दिर का निर्माण करवाया था। उसने तांत्रिक शैली का मातृगृह और एक बावड़ी का भी निर्माण करवाया था। इस लेख से पाँचवीं शताब्दी की सामंती व्यवस्था के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है।

बड़ली गाँव का शिलालेख (443 ई. पूर्व)

- यह शिलालेख अजमेर जिले के **बड़ली गाँव के भिलोत माता मंदिर** से एक स्तम्भ के टुकड़े के रूप में प्राप्त हुआ।
- यह राजस्थान का सबसे **प्राचीन शिलालेख** है।
- शिलालेख की **लिपि ब्राह्मी** है। यह शिलालेख खंडित अवस्था में 1912 ई. में डॉ. जी. एच. ओझा को प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में रखा गया है।

भाब्रू शिलालेख

- यह शिलालेख **1837 ई. में कैप्टन बर्ट** को बीजक की पहाड़ी (बैराठ) से प्राप्त हुआ था।
- इस शिलालेख की **भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी** है।
- इस अभिलेख में सम्राट अशोक ने बुद्ध धर्म और संघ में आस्था व्यक्त की है। यह शिलालेख अशोक के बौद्ध धर्म के अनुयायी होने का प्रमाण प्रदान करता है।

बैराठ शिलालेख

- यह शिलालेख बैराठ के पास **भीम डूंगरी की तलहटी** में एक चट्टान पर उत्कीर्ण है।
- इस शिलालेख की खोज **1871-72 ई.** में पुरातत्त्ववेत्ता **कार्लाइल** ने की थी। शिलालेख की भाषा प्राकृत और लिपि ब्राह्मी है।

नगरी का लेख (200-150 ई.पू.)

- यह शिलालेख डॉ. ओझा को नगरी (चित्तौड़गढ़) नामक स्थान पर प्राप्त हुआ था। डॉ. ओझा ने इस लेख को उदयपुर संग्रहालय में रखा। इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख की लिपि से मिलती-जुलती है।

विजयगढ़ यूप-स्तम्भ लेख (371 ई.)

- यह शिलालेख भरतपुर के बयाना स्थित विजयगढ़ दुर्ग की दीवार पर पाया गया।
- इसमें यशोवर्मन के पुत्र विष्णुवर्धन द्वारा मालव युग में पुंडरिक यज्ञ करने का उल्लेख है।

नगरी का शिलालेख (424 ई.)

- यह शिलालेख डी. आर. भंडारकर को नगरी (चित्तौड़गढ़) के उत्खनन के दौरान प्राप्त हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख अजमेर संग्रहालय में सुरक्षित है।
- शिलालेख की **भाषा संस्कृत** और **लिपि नागरी** है।

भ्रमर माता का लेख (490 ई.)

- यह शिलालेख प्रतापगढ़ की छोटी सादड़ी स्थित भ्रमर माता के मंदिर से प्राप्त हुआ था। यह लेख पाँचवीं शताब्दी की राजनीतिक स्थिति को समझने में महत्त्वपूर्ण है। प्रशस्ति का रचनाकार मित्रसोम का पुत्र ब्रह्मसोम था व लेखक पूर्वा था।

बसन्तगढ़ का लेख (625 ई.)

- यह शिलालेख सिरोही जिले के बसन्तगढ़ से वि.सं. 682 का प्राप्त हुआ है, जो चावड़ा वंश के शासक वर्मलात के समय का है।
- इस लेख से यह ज्ञात होता है कि वर्मलात उस समय अर्बुद देश का स्वामी था। इस लेख में सामन्त प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। वर्तमान में यह शिलालेख राजकीय म्यूजियम, अजमेर में रखा गया है।

सांमोली शिलालेख (646 ई.)

- उदयपुर जिले के सांमोली ग्राम से प्राप्त यह लेख गुहिल वंश के शासक शिलादित्य के समय का है। मेवाड़ के गुहिल वंश के समय को निश्चित करने तथा उस समय की आर्थिक और साहित्यिक स्थिति की जानकारी के लिए यह लेख विशेष महत्त्वपूर्ण है।

अपराजित का शिलालेख (661 ई.)

- यह शिलालेख **नागदा गाँव** के पास स्थित **कुंडेश्वर के मंदिर** में **डॉ. ओझा** को प्राप्त हुआ था।
- डॉ. ओझा ने इसे उदयपुर के **विक्टोरिया हॉल संग्रहालय** में रखवाया। गुहिल शासक अपराजित ने शक्तिशाली वराहसिंह को परास्त कर उसे अपने अधीन किया और बाद में उसे अपना सेनापति नियुक्त किया।

मंडोर का शिलालेख (685 ई.)

- यह शिलालेख मंडोर (जोधपुर) की एक बावड़ी में आयताकार शिला पर उत्कीर्ण है।
- इसमें विष्णु तथा शिव की पूजा का उल्लेख है।

  नोट: मंडोर का दूसरा शिलालेख 837 ई. में गुर्जर प्रतिहार शासक बाउक द्वारा खुदवाया गया था।

मानमोरी का शिलालेख- (713 ई.)

- यह शिलालेख चित्तौड़ के पास पूठोली गाँव में मानसरोवर झील के तट पर स्थित एक स्तम्भ पर उत्कीर्ण था।

- कर्नल जेम्स टॉड को यह शिलालेख मिला था, लेकिन इसे इंग्लैंड ले जाते समय भारी होने के कारण उन्होंने इसे समुद्र में फेंक दिया। इस शिलालेख में अमृत मंथन की कथा का उल्लेख किया गया है और इसके बाद चार राजाओं महेश्वर, भीम, भोज और मान का वर्णन है।
- इसमें भोज के पुत्र मान (मोरी वंश) द्वारा मानसरोवर झील के निर्माण का भी उल्लेख है।

कणसवा का शिलालेख (738 ई.)

- यह शिलालेख कोटा के कणसवा गाँव के शिवालय में लगा हुआ है। इसमें धवल नामक एक मौर्यवंशी राजा का उल्लेख है।
- इस उल्लेख के बाद राजस्थान में अन्य किसी मौर्यवंशी राजा का वर्णन नहीं मिलता है।

घटियाला का शिलालेख (861 ई.)

- यह शिलालेख घटियाला (जोधपुर) स्थित एक स्तम्भ के दो तरफ उत्कीर्ण है, जो 'माता की साल' नामक जैन मंदिर के निकट स्थित है। यह शिलालेख संस्कृत भाषा में है, जिसमें कुछ पद्य और गद्य का प्रयोग किया गया है।
- इन लेखों में कक्कुक प्रतिहार को न्यायप्रिय, जनहित में कार्य करने वाला, दुष्टों को दंड देने वाला, दीनों का रक्षक और वीर शासक बताया गया है।
- इस लेख से यह पता चलता है कि कक्कुक ने दो और स्तम्भों की स्थापना की थी — एक घटियाला में और दूसरा मंडोर में।
- दूसरे शिलालेख में उल्लेख है कि रोहिन्सकूप (घटियाला) आभीरों के उपद्रव के कारण नागरिकों के लिए असुरक्षित था, जिसे कक्कुक ने भयरहित बना कर आबाद किया।
- इस लेख में मग जाति के ब्राह्मणों का भी उल्लेख है, जो वर्ण व्यवस्था की ओर संकेत करता है।

सारणेश्वर प्रशस्ति (953 ई.)

- यह प्रशस्ति उदयपुर के श्मशान में स्थित सारणेश्वर महादेव के मंदिर के सभामंडप में मिली थी। यह प्रशस्ति संभवतः पहले आहड़ गाँव में स्थित वराह मंदिर में लगी हुई थी।
- इसमें गुहिलवंशीय राजा अल्लट, उसकी माता महालक्ष्मी और उसके पुत्र नरवाहन के बारे में जानकारी मिलती है।
- इस शिलालेख की **भाषा संस्कृत** और **लिपि नागरी** है।

नाथ प्रशस्ति - एकलिंग जी (971 ई.)

- यह शिलालेख एकलिंग जी के मंदिर से कुछ ऊँचे स्थान पर स्थित लकुलीश के मंदिर में लगा हुआ है, जिसे **'नाथ प्रशस्ति'** भी कहा जाता है।
- इसमें संस्कृत भाषा में पद्यों का उपयोग किया गया है और देवनागरी लिपि का प्रयोग किया गया है।
- यह प्रशस्ति गुहिल शासक नरवाहन के समय का महत्त्वपूर्ण लेख है और मेवाड़ के राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। इस प्रशस्ति के तीसरे और चौथे श्लोक में नागदा नगर का वर्णन है।
- इस प्रशस्ति के रचनाकार वेदांग मुनि के शिष्य आम्र कवि थे।

हर्षनाथ के मंदिर की प्रशस्ति (973 ई.)

- यह शिलालेख सीकर के हर्षनाथ मंदिर से संबंधित है और यह सांभर के चौहान राजा विग्रहराज द्वितीय के समय का है।
- इस प्रशस्ति के अनुसार हर्षनाथ मंदिर का निर्माण अल्लट ने किया था। इस शिलालेख में चौहान वंश के शासकों के वंशक्रम और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।
- चौहान वंश के शासकों के नाम इस प्रकार हैं- गुवक, चन्द्रराज, गुवक द्वितीय, चन्दन, वाक्पतिराज, सिंहराज और विग्रहराज।
- इस प्रशस्ति में वागड़ क्षेत्र के लिए 'वार्गट' शब्द का प्रयोग किया गया है।

जालौर का लेख (1118 ई.)

- यह शिलालेख सफेद पत्थर पर उत्कीर्ण है और जालौर दुर्ग के तोपखाना की इमारत की उत्तरी दीवार में लगा हुआ था।
- वर्तमान में यह शिलालेख जोधपुर संग्रहालय में रखा गया है।
- शिलालेख में जालौर शाखा के परमारों की जानकारी मिलती है, जिसमें वाक्पतिराज को इस शाखा का प्रवर्तक बताया गया है।
- वाक्पतिराज का आबू के परमार धरणीवराह से संबंध था।
- इस शिलालेख में परमारों की उत्पत्ति वशिष्ठ के यज्ञ से होने का उल्लेख किया गया है।

किराडू का लेख (1161 ई.)

- यह शिलालेख बाड़मेर के किराडू स्थित एक शिव मंदिर के खम्भे पर उत्कीर्ण है।
- इसमें किराडू की परमार शाखा का वंशक्रम दिया गया है और परमारों की उत्पत्ति ऋषि वशिष्ठ के आबू यज्ञ से बताई गई है।
- शिलालेख में आबू के उत्पलराज के पिता सिन्धुराज को मारवाड़ का शासक बताया गया है।

बिजोलिया का शिलालेख (1170 ई.)

- इस शिलालेख को 1170 ई. में बिजोलिया के पार्श्वनाथ मंदिर की उत्तरी दीवार के पास एक चट्टान पर उत्कीर्ण किया गया था।
- यह शिलालेख चौहान शासक सोमेश्वर के समय का है।
- इस शिलालेख को दिगंबर जैन श्रावक 'लोलाक' ने मंदिर और कुंड निर्माण की स्मृति में लगाया था।
- इस शिलालेख में सांभर और अजमेर के चौहान वंश की सूची और उनकी उपलब्धियों का विवरण मिलता है।

- इसमें चौहानों को वत्सगोत्र के ब्राह्मण बताया गया है और यह संकेत मिलता है कि विग्रहराज चतुर्थ ने दिल्ली को अपने अधीन किया था। शिलालेख में बिजोलिया के आस-पास के पठारी क्षेत्र को 'उत्तमाद्री' कहा गया है, जो आज 'ऊपरमाल' के नाम से जाना जाता है।
- इसमें कई स्थानों के प्राचीन नामों का उल्लेख है, जैसे- जाबालिपुर (जालौर), नड्डुल (नाडोल), शाकंभरी (सांभर), दिल्लिका (दिल्ली), श्रीमाल (भीनमाल), मंडलकर (मांडलगढ़), विंध्यवल्ली (बिजोलिया) आदि।
- इस प्रशस्ति के रचनाकार गुणभद्र थे, इसे कायस्थ केशव ने लिखा और गोविन्द ने उत्कीर्ण किया।
- इस शिलालेख में यह भी उल्लेख है कि चौहानों के मूलपुरुष वासुदेव चाहमान ने लगभग 551 ई. में शांकभरी में राज्य स्थापित किया था और सांभर झील बनवाई थी। वासुदेव ने अहिछत्रपुर को अपनी राजधानी बनाया था।

बीठू का लेख (1273 ई.)

- 1273 ई. का यह शिलालेख पाली के बीठू गाँव के पास प्राप्त हुआ है। इस शिलालेख से यह प्रमाणित होता है कि सीहा सेतु कुंवर का पुत्र था और उसी तिथि को उसकी मृत्यु हुई थी।
- इस शिलालेख से सीहा की मृत्यु तिथि निश्चित होती है और इसके माध्यम से उसके चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है।
- सीहा के स्मारक के रूप में उसकी पत्नी पार्वती ने उस स्थान पर एक देवली (मंदिर) स्थापित की थी।

चीरवा का शिलालेख (1273 ई.)

- यह शिलालेख चीरवा गाँव (उदयपुर) के एक मंदिर के बाहरी द्वार पर लगा हुआ है।
- इस शिलालेख में संस्कृत भाषा में 51 श्लोक हैं और यह वागेश्वर और वागेश्वरी की आराधना से प्रारंभ होता है।
- इसमें गुहिवंशीय बप्पा रावल के वंशधर पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह और समरसिंह की उपलब्धियों का वर्णन किया गया है।
- शिलालेख में यह उल्लेख है कि जैत्रसिंह इतना पराक्रमी था कि वह शत्रु राजाओं के लिए प्रलय मारूत के समान था और मालवा, गुजरात, मारवाड़, जांगलदेश तथा सुल्तान उसके मानमर्दन में असफल रहे।

श्रृंगी ऋषि शिलालेख (1428 ई.)

- यह शिलालेख एकलिंगजी से 6 मील दूर दक्षिण-पूर्व में स्थित श्रृंगी ऋषि नामक स्थान (उदयपुर) से प्राप्त हुआ है।
- यह शिलालेख राणा मोकल के समय का है और यह संस्कृत में लिखा गया है।
- इस शिलालेख में मोकल द्वारा एकलिंग मंदिर के चारों ओर प्राचीर बनाने का भी उल्लेख है।
- इस लेख में हम्मीर के बारे में कहा गया है कि उसने झालावाड़ के स्वामी को परास्त किया, ईडर के शासक को मारा, पालूर को भस्म किया और भीलों को परास्त कर भोमट और वागड़ के भागों पर अधिकार स्थापित किया।

कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)

- यह प्रशस्ति चित्तौड़ के कीर्ति स्तम्भ की शिलाओं पर अंकित है, जिनमें से अब केवल दो शिलाएँ बची हैं, अन्य शिलाएँ नष्ट हो चुकी हैं। इस प्रशस्ति में बप्पा और हम्मीर का वर्णन है और कुम्भा के बारे में उल्लेख है कि उसने माण्डव्यपर (मंडोर) से हनुमानजी की मूर्ति लाकर वि.सं. 1515 में दुर्ग के मुख्य द्वार पर उसकी स्थापना की।
- कुम्भा को इस प्रशस्ति में "दानगुरू", "राजगुरू" और "शैलगुरू" के रूप में सम्मानित किया गया है।
- कुम्भा द्वारा रचित ग्रंथों चण्डीशतक, गीतगोविन्द की टीका, संगीतराज और कई नाटकों का उल्लेख किया गया है।
- अंत की पंक्तियों में प्रशस्तिकार "महेश भट्ट" का उल्लेख है।

बीकानेर की प्रशस्ति / रायसिंह प्रशस्ति (1594 ई.)

- यह प्रशस्ति बीकानेर के किले के सूरजपोल द्वार के एक पार्श्व में स्थित है और यह महाराजा रायसिंह के समय की है।
- इस प्रशस्ति की भाषा संस्कृत है।
- इस प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि 1589 ई. में बीकानेर किले का निर्माण आरंभ हुआ और 1594 ई. में गढ़ का निर्माण पूरा हुआ। इस निर्माण कार्य की देखरेख मंत्री कर्मचंद ने की थी।
- इसमें बीका से लेकर रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है।
- इस शिलालेख का रचनाकार 'जइता' नामक जैन मुनि था।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1652 ई.)

- यह प्रशस्ति उदयपुर के जगन्नाथराय मंदिर (जगदीश मंदिर) के सभामंडप में दोनों तरफ श्याम पत्थर पर उत्कीर्ण है।
- इस प्रशस्ति के पहले हिस्से में बप्पा से लेकर सांगा तक के पूर्वजों की उपलब्धियों का उल्लेख है।
- इस प्रशस्ति में हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन भी किया गया है, जो महाराणा प्रताप के समय का महत्त्वपूर्ण युद्ध था।
- इस प्रशस्ति के अनुसार महाराणा जगतसिंह ने जगन्नाथराय (जगदीश मंदिर) का निर्माण करवाया।
- इस प्रशस्ति का रचनाकार कृष्णभट्ट थे।

राजप्रशस्ति (1676 ई.)

- यह प्रशस्ति राजसमंद झील की नौ चौकी पाल पर स्थित कुल 25 श्याम रंग के पाषाणों पर उत्कीर्ण है, जिसे महाकाव्य की संज्ञा दी गई है। इसके रचयिता रणछोड़ भट्ट (तैलंग ब्राह्मण) थे और इसकी भाषा संस्कृत है।

- इसमें बप्पा रावल से लेकर राजसिंह तक के शासकों की वंशावली और उनकी उपलब्धियों का विवरण है।
- 1660 ई. में औरंगजेब के विरुद्ध जाकर किशनगढ़ की राजकुमारी चारूमती से विवाह और औरंगजेब से युद्ध एवं संधि का वर्णन किया गया है।
- इस प्रशस्ति में महाराणा प्रताप के समय लड़े गए युद्धों और अमरसिंह के समय मुगलों से की गई संधि का भी उल्लेख है।

चित्तौड़ का सुल्तान गयासुद्दीन का लेख (1321-25 ई.)

- यह लेख फारसी भाषा में है और चित्तौड़ में पाया गया था।
- यह लेख खंडित अवस्था में प्राप्त हुआ, जिसमें तीन शेर खुदे हुए हैं। इसमें तुगलक वंशी बादशाह को 'दुनिया को प्रकाशित करने वाला सूर्य' और ईश्वर की छाया के समान बताया गया है।
- यह लेख सम्भवतः सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक का है। ।

धाईबी पीर की दरगाह का लेख (1325 ई.)

- इस लेख में चित्तौड़गढ़ को "खिज्राबाद" के नाम से अंकित किया गया है। इस लेख में मलिक आसुद्दीन (जो चित्तौड़ का गर्वनर था) द्वारा चित्तौड़ में सुल्तान सराय बनाने का उल्लेख है। इस लेख से मुहम्मद-बिन-तुगलक के प्रभाव क्षेत्र का अनुमान होता है।

राजस्थान के प्रमुख दानपत्र/ताम्रपत्र

धुलेव का दान-पत्र (679 ई.)

- यह संस्कृत भाषा का ताम्रपत्र ऋषभदेव (उदयपुर) के एक ब्राह्मण के पास मिला था।
- इस दानपत्र में किष्किन्धा (कल्याणपुर) के महाराज भेटी द्वारा 'महाराज बप्पदति' के श्रेयार्थ और धर्मार्थ उब्बरक गाँव को भट्टिनाग नामक ब्राह्मण को अनुदान में देने का उल्लेख है।

ब्रोंच गुर्जर का ताम्रपत्र (978 ई.)

- इस ताम्रपत्र में सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा और कावेरी तक के गुर्जर वंश के अभियानों का वर्णन है।
- ताम्रपत्र के आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को यू-ए-ची (कुषाण) की सन्तान माना है, जो कुषाण शासक कनिष्क के काल में भारत आए थे।

चिकली ताम्रपत्र (1483 ई.)

- यह ताम्रपत्र वागड़ी भाषा में उत्कीर्ण है।
- इस ताम्रपत्र से उस समय ली जाने वाली लाग-बाग का पता चलता है।
- इस अवधि में पटेल, सुथार और ब्राह्मण खेती का कार्य करते थे।
- खेतों के टुकड़ों को "कटकों" में बांटने की पद्धति प्रचलित थी।

विभिन्न रियासतों में प्रचलित सिक्के:

क्र.	रियासतें	सिक्के
1.	जयपुर राज्य	झाड़साही, मुहम्मदशाही
2.	अलवर राज्य	रावशाही रूपया, रावशाही टका
3.	भरतपुर राज्य	शाहआलमी
4.	धौलपुर राज्य	तमंचाशाही
5.	करौली राज्य	माणकशाही
6.	कोटा राज्य	मदनशाही, हाली, गुमानशाही
7.	बूंदी राज्य	रामशाही, कटारशाही, चेहरेशाही, पुराना रूपया
8.	झालावाड़ राज्य	पुराने मदनशाही, नये मदनशाही।
9.	प्रतापगढ़ राज्य	सालिमशाही, नया सालिमशाही, मुबारकशाही
10.	बांसवाड़ा राज्य	लक्ष्मणशाही, सालिमशाही।
11.	डूंगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया
12.	मेवाड़	ढींगला, सिक्का एचली, चित्तौड़ी, भीलाड़ी, उदयपुरी, चाँदोड़ी, शाहआलमी, स्वरूपशाही, फतेहशाही, भोपालशाही, भींडरिया
13.	सलूम्बर	पदमशाही
14.	सिरोही राज्य	भिलाड़ी, ढब्बुशाही
15.	जैसलमेर राज्य	अखयशाही, मुहम्मदशाही, डोडिया (ताँबे)
16.	जोधपुर राज्य	गधिया सिक्के, विजयशाही (बाइसंदा) भीमशाही, गजशाही, लल्लूलिया, ढब्बूशाही (तांबे का)
17.	पाली टकसाल	(बिजैशाही विजयशाही)
18.	बीकानेर राज्य	गजशाही, गंगाशाही।
19.	किशनगढ राज्य	शाहआलमी।
20.	नागौर टकसाल	अमरशाही।
21.	कुचामन टकसाल	इकतीसंदा।
22.	मेड़ता टकसाल	अठ्यासिया, चांदशाही।
23.	शाहपुरा राज्य	ग्यारसंदा/संदिया, माधोशाही।
24.	टोंक	चंवरशाही।

अभ्यास प्रश्न

1. **अभिलेख, जो प्राचीन राजस्थान में भागवत/वैष्णव सम्प्रदाय के प्रभाव की पुष्टि करता है-**
   (a) घोसुण्डी अभिलेख
   (b) बुचकला अभिलेख
   (c) हेलियोदोरस का बेसनगर अभिलेख
   (d) घटियाला अभिलेख
2. **'घोसुण्डी' शिलालेख स्थित है-**
   (a) बारां (b) चित्तौड़गढ़
   (c) भीलवाड़ा (d) अजमेर

3 कौन-सा अभिलेख महाराणा कुम्भा के लेखन पर प्रकाश डालता है?
(a) कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)
(b) कीर्तिस्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)
(c) जगन्नान राय शिलालेख (1652 ई.)
(d) राज प्रशस्ति (1676 ई.)

4. निम्न में से किस प्रशस्ति के रचयिता अत्रि और महेश थे?
(a) बिजौलिया अभिलेख (b) रणकपुर प्रशस्ति
(c) कुम्भलगढ़ प्रशस्ति (d) कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति

5. चीरवा शिलालेख किस राजवंश के शासकों का उल्लेख करता है?
(a) मारवाड़ के राठौड़ शासकों का
(b) मेवाड़ के गुहिल शासकों का
(c) आमेर के कछवाहा शासकों का
(d) अजमेर के चौहान शासकों का

6. राजप्रशस्ति का काल है-
(a) 1652 ई. (b) 1576 ई.
(c) 1676 ई. (d) 1439 ई.

7. बिजोलिया अभिलेख किस वंश के इतिहास की जानकारी का महत्त्वपूर्ण साधन है?
(a) राठौड़ (b) सिसोदिया
(c) चौहान (d) प्रतिहार

8. बिजोलिया लेख के अनुसार साँभर झील का निर्माण किसने करवाया?
(a) अजयराज (b) वासुदेव
(c) कान्हड़देव (d) अर्णोराज

9. ऐतिहासिक स्थल 'जाबालिपुर' की आधुनिक पहचान है-
(a) जालौर (b) सिरोही
(c) नागौर (d) जैसलमेर

10. घटियाला शिलालेख में निम्नांकित में से किस वंश की जानकारी प्राप्त होती है?
(a) गुहिलोत (b) कच्छवाहा
(c) सिसोदिया (d) मण्डोर प्रतिहार

11. घटियाला अभिलेख से सम्बन्धित कथनों में असत्य है-
(a) अभिलेख में प्रतिहार शासक हरिशचन्द्र एवं उसके वंशजों का विवरण है।
(b) अभिलेख में नागभट्ट प्रथम की राजधानी को मंडोर में स्थानांतरित करने का विवरण है।
(c) अभिलेख में 'मग' जातीय के ब्राह्मणों का उल्लेख है।
(d) यह अभिलेख चार अभिलेखीय लेखों का समूह है।

12. बिजोलिया अभिलेख का काल है-
(a) 1676 ई. (b) 1170 ई.
(c) 953 ई. (d) 1273 ई.

13. बरली का शिलालेख जो कि अशोक के काल से पूर्व का माना जाता है, कहाँ स्थित है?
(a) अजमेर (b) जयपुर
(c) टोंक (d) भीलवाड़ा

14. बरली स्टोन-एपिग्राफ (शिलालेख) चिह्नित किया गया है-
(a) संस्कृत पांडुलिपि में (b) ब्राह्मी पांडुलिपि में
(c) प्राकृत पांडुलिपि में (d) खरोष्ठी पांडुलिपि में

15. किस अभिलेख में प्रतिहारों को सौमित्र (लक्ष्मण) से उद्भूत हुआ कहा गया है?
(a) घटियाला अभिलेख (b) जोधपुर अभिलेख
(c) ग्वालियर अभिलेख (d) दौलतपुर अभिलेख

16. महाराणा कुम्भा के समय का प्राचीनतम ज्ञात अभिलेख (विक्रमी संवत् 1490) प्राप्त होता है ग्राम-
(a) माछा से (b) धुलेव से
(c) सिंघोली से (d) पदराड़ा से

17. शिलालेख/प्रशस्ति और उनके उत्कीर्णन वर्ष के सही जोड़े कौनसे हैं?
1. अचलेश्वर शिलालेख-1285 ई.,
2. बिजोलिया शिलालेख-1170 ई.,
3. चीरवा शिलालेख-987 ई.,
4. कुम्भलगढ़ प्रशस्ति-1460 ई.
(a) 1, 2, 3 (b) 1, 2, 4
(c) 2, 3 (d) 1,4

18. नाथ प्रशस्ति राजस्थान की किस रियासत से सम्बन्धित है?
(a) मारवाड़ (b) जयपुर
(c) मेवाड़ (d) जैसलमेर

19. आलमशाही मुगलिया सिक्का राजस्थान में कहाँ प्रचलित था?
(a) जयपुर (b) बीकानेर
(c) अलवर (d) भरतपुर

20. प्राचीनतम 'पंचमार्क' सिक्कों का समय क्या है?
(a) 800 ई.पू. से 500 ई.पू.
(b) 200 ई.पू. से 50 ई.पू.
(c) 400 ई.पू. से 100 ई.पू.
(d) 600 ई.पू. से 200 ई.पू.

21. मुगल शासकों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के कारण जयपुर के कछवाहा शासकों द्वारा जारी किए गए सिक्के कहलाते थे-
(a) विजयशाही (b) झिलाड़ी
(c) दीनार (d) झाड़शाही

ANSWER KEY

1. [a]	2. [b]	3. [b]	4. [d]	5. [b]
6. [c]	7. [c]	8. [b]	9. [a]	10. [d]
11. [b]	12. [b]	13. [a]	14. [b]	15. [c]
16. [d]	17. [b]	18. [c]	19. [b]	20. [d]
21. [d]				

♦♦♦♦

राजस्थान की राजव्यवस्था

राज्यपाल 01

राज्यपाल से संबंधित प्रमुख अनुच्छेद

अनुच्छेद	विवरण
153	राज्यों के राज्यपाल
154	राज्य की कार्यकारी शक्ति
155	राज्यपाल की नियुक्ति
156	राज्यपाल के पद की पदावधि
157	राज्यपाल के रूप में नियुक्ति के लिए योग्यताएँ
158	राज्यपाल कार्यालय की शर्तें
159	राज्यपाल द्वारा शपथ या प्रतिज्ञान
160	कतिपय आकस्मिकताओं में राज्यपाल के कार्यों का निर्वहन
161	क्षमा आदि देने की राज्यपाल की शक्ति
162	राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार
163	राज्यपाल को सहायता और सलाह देने के लिए मंत्रिपरिषद्
164	मंत्रियों से संबंधित अन्य प्रावधान जैसे नियुक्तियाँ, कार्यकाल, वेतन और अन्य
165	राज्य के महाधिवक्ता
166	किसी राज्य की सरकार के कामकाज का संचालन
167	राज्यपाल को सूचना प्रस्तुत करने आदि के संबंध में मुख्यमंत्री के कर्तव्य
174	राज्य विधानमंडल के सत्र, सत्रावसान और विघटन
175	राज्य विधानमण्डल के सदनों को सम्बोधित करने और संदेश भेजने के राज्यपाल के अधिकार।
176	राज्य विधानमण्डल के सदनों में राज्यपाल व विशेष अभिभाषण।
200	विधेयकों पर सहमति (अर्थात् राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों पर राज्यपाल की सहमति)
201	राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के विचार हेतु आरक्षित विधेयक
213	अध्यादेश प्रख्यापित करने की राज्यपाल की शक्ति
217	उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति के मामले में राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल से परामर्श किया जाना।
233	राज्यपाल द्वारा जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति
234	राज्यपाल द्वारा राज्य की न्यायिक सेवा में व्यक्तियों (जिला न्यायाधीशों के अलावा) की नियुक्ति।

राज्य का राज्यपाल

- **अनुच्छेद 153** – प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा; एक व्यक्ति दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल हो सकता है (7वां संविधान संशोधन, 1956)।
- **अनुच्छेद 155** – राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा होती है (मुहर लगे आदेश से)।
- **SC निर्णय (1979)** – राज्यपाल का पद केंद्र के अधीन रोजगार नहीं, बल्कि स्वतंत्र संवैधानिक पद है।

अनुच्छेद 157 – राज्यपाल हेतु अर्हताएँ:
- भारत का नागरिक हो।
- न्यूनतम आयु 35 वर्ष।

दो परंपराएँ (कुछ अपवादों के साथ):
- राज्यपाल उस राज्य का निवासी न हो।
- नियुक्ति में मुख्यमंत्री से परामर्श लिया जाए।

अनुच्छेद 158 – पद की शर्तें:
- सांसद या विधायक नहीं होना चाहिए।
- किसी लाभ के पद पर नहीं होना चाहिए।
- वेतन-भत्ते संसद द्वारा निर्धारित होंगे और कार्यकाल में कम नहीं किए जा सकते।
- दो या अधिक राज्यों के राज्यपाल होने पर भत्ते राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित होंगे।

शपथ / प्रतिज्ञान (अनुच्छेद 159)
- शपथ में संविधान, राज्य की सुरक्षा व जनहित की रक्षा का संकल्प।
- शपथ दिलाने वाला – उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश; अनुपस्थित हो तो वरिष्ठ न्यायाधीश।

विशेषाधिकार एवं उन्मुक्तियाँ (अनुच्छेद 361)
- शासकीय कृत्यों के लिए विधिक उत्तरदायित्व से उन्मुक्ति।
- पद पर रहते आपराधिक कार्यवाही नहीं हो सकती, न ही गिरफ्तारी।
- व्यक्तिगत कार्यों के लिए सिविल मामला चल सकता है (2 माह पूर्व नोटिस आवश्यक)।

कार्यकाल (अनुच्छेद 156)
- सामान्य कार्यकाल: 5 वर्ष, लेकिन राष्ट्रपति के प्रसादपर्यन्त पद पर बने रहते हैं।
- स्थानांतरण व पुनः नियुक्ति संभव।
- उत्तराधिकारी के कार्यभार संभालने तक पद पर बने रहते हैं।
- त्याग-पत्र राष्ट्रपति को दिया जाता है।
- आकस्मिक मृत्यु पर उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को कार्यभार सौंपा जाता है।

वेतन एवं भत्ते
- संसद द्वारा निर्धारित, भुगतान राज्य की संचित निधि से।
- उल्लेख – संविधान की दूसरी अनुसूची में।
- 2012 में वेतन ₹3.5 लाख प्रतिमाह किया गया।

कार्यकारी शक्तियाँ
- अनुच्छेद 154 के अनुसार राज्य की कार्यपालिका शक्ति राज्यपाल में निहित।
- राज्यपाल राज्य सरकार के सभी कार्य औपचारिक रूप से अपने नाम से करता है।
- मुख्यमंत्री, मंत्रियों, महाधिवक्ता, राज्य निर्वाचन आयुक्त, लोक सेवा आयोग अध्यक्ष/सदस्य की नियुक्ति करता है।
- विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति – कुलपतियों की नियुक्ति करता है।
- राज्यपाल राष्ट्रपति से राष्ट्रपति शासन की सिफारिश कर सकता है।

विधायी शक्तियाँ

- राज्य विधानसभा का अभिन्न अंग; सत्र को आहूत या सत्रावसान और विघटित कर सकता है।
- सत्र के पहले दिन व चुनाव पश्चात् पहला सत्र संबोधित करता है।
- विधान परिषद में 1/6 सदस्यों को नामित कर सकता है।
- अध्यादेश (अनु. 213) जारी करने की शक्ति – सत्र न होने पर 6 सप्ताह तक प्रभावी।
- विधेयकों को स्वीकारना, रोकना, पुनर्विचार हेतु लौटाना या राष्ट्रपति के पास भेजना।

वित्तीय शक्तियाँ

- संचित निधि पर नियंत्रण – बिना अनुमति खर्च/जमा नहीं हो सकता।
- बजट विधानसभा में प्रस्तुत कराना सुनिश्चित करता है।
- धन विधेयक केवल राज्यपाल की अनुशंसा पर प्रस्तुत किया जा सकता है।
- आकस्मिक व्यय हेतु आकस्मिक निधि से अग्रिम ले सकता है।
- प्रत्येक 5 वर्ष में वित्त आयोग का गठन करता है।

न्यायिक शक्तियाँ

- जिला न्यायाधीशों की नियुक्ति/स्थानांतरण करता है (अनु. 233)।
- उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति में परामर्श करता है (अनु. 217)।
- अनु. 234 के अनुसार अन्य न्यायिक अधिकारियों की नियुक्ति करता है।
- न्यायाधीशों को शपथ दिलाता है।

क्षमा की शक्ति (अनु. 161)

- राज्य कानून के अंतर्गत अपराधों की सजा माफ, निलंबित या कम कर सकता है।

स्वविवेकीय शक्तियाँ (अनु. 163)

- राष्ट्रपति शासन की सिफारिश, विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजना, बहुमत न मिलने पर मुख्यमंत्री की नियुक्ति आदि मामलों में विवेकाधिकार।
- असम, मिजोरम, त्रिपुरा आदि राज्यों में जनजातीय परिषदों के वित्तीय मसलों पर विशेष अधिकार।

राष्ट्रपति शासन के दौरान राजस्थान में राज्यपाल

क्र.	अवधि	अवधि (दिन)	राज्यपाल
1	13 मार्च – 26 अप्रैल 1967	44 दिन	डॉ. सम्पूर्णानंद, सरदार हुकुम सिंह
2	30 अप्रैल – 21 जून 1977	52 दिन	वेदपाल त्यागी, रघुकुल तिलक
3	17 फरवरी – 5 जून 1980	109 दिन	रघुकुल तिलक
4	15 दिसंबर 1992 – 3 दिसंबर 1993	353 दिन	डॉ. एम. चेन्ना रेड्डी, धनिकलाल मंडल (प्रभारी), बलिराम भगत

पद पर रहते हुए राज्यपालों की मृत्यु

क्रम	नाम	वर्ष
1	दरबारा सिंह	1998
2	निर्मल चन्द जैन	2003
3	एस. के. सिंह	2009
4	श्रीमती प्रभा राव	2010

राजस्थान की महिला राज्यपाल

नाम	कार्यकाल	विशेष जानकारी
श्रीमती प्रतिभा पाटिल	08-11-2004 से 23-06-2007	प्रथम महिला राज्यपाल, पद से त्याग-पत्र देने वाली प्रथम महिला
श्रीमती प्रभा राव	03-12-2009 से 24-01-2010 (अतिरिक्त प्रभार) 25-01-2010 से 26-04-2010	कार्यकाल के दौरान मृत्यु, HP की राज्यपाल के रूप में अतिरिक्त प्रभार
श्रीमती मार्गरेट अल्वा	12-05-2012 से 07-08-2014	—

राजस्थान के संदर्भ में राज्यपाल

- राजस्थान में 30 मार्च, 1949 से 31 अक्टूबर, 1956 तक राज्य में राजप्रमुख का पद था। इस पद पर जयपुर के महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय नियुक्त थे। सवाई मानसिंह द्वितीय राजस्थान के पहले व एकमात्र राजप्रमुख थे।
- राजस्थान में 1 नवम्बर, 1956 को राज्य के पुनर्गठन के बाद राजप्रमुख का पद समाप्त करके राज्यपाल का पद सृजित किया गया।
- राज्य के प्रथम राज्यपाल सरदार गुरुमुख निहालसिंह बने।

अभ्यास प्रश्न

1. राजस्थान में राज्य प्रशासन के विधितः प्रमुख हैं-

(a) राज्य के राज्यपाल
(b) राज्य के महाधिवक्ता
(c) संभागीय आयुक्त
(d) राज्य के मुख्यमंत्री

2. भारतीय संविधान का कौन-सा अनुच्छेद उपबंध करता है, 'प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा'?

(a) अनुच्छेद 154
(b) अनुच्छेद 155
(c) अनुच्छेद 153
(d) अनुच्छेद 164

3. राजस्थान में आखिरी बार जब राष्ट्रपति शासन लगाया गया, तब राज्यपाल कौन थे?

(a) वसंतराव पाटिल
(b) एम. चेन्ना रेड्डी
(c) रघुकुल तिलक
(d) देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय

4. राजस्थान में राष्ट्रपति शासन कितनी बार लगाया गया?
(a) 2
(b) 6
(c) 4
(c) 7

5. राज्य विधानसभा में धन विधेयक केवल किसकी अनुशंसा से प्रस्तुत किया जा सकता है?
(a) अध्यक्ष
(b) वित्त मंत्री
(c) मुख्यमंत्री
(d) राज्यपाल

6. राज्यपाल पद हेतु न्यूनतम आयु सीमा निर्धारित है-
(a) 35 वर्ष
(b) 25 वर्ष
(c) 18 वर्ष
(d) 50 वर्ष

7. राज्यपाल पद पर नियुक्त होने के लिये योग्यताएँ किस अनुच्छेद में दी गई हैं?
(a) अनु.159
(b) अनु.151
(c) अनु.157
(d) अनु.161

8. भारतीय संविधान का निम्नलिखित में से कौन-सा अनुच्छेद राज्यपाल के कार्यकाल से संबंधित है?
(a) अनु.156
(b) अनु.163
(c) अनु.171
(d) अनु. 158

9. राजस्थान के राज्यपाल और उनके द्वारा पद व गोपनीयता की शपथ दिलवाए हुए मुख्यमंत्री के त्रुटिपूर्ण युग्म को पहचानिए :
(a) जोगिन्दर सिंह - हरिदेव जोशी
(b) रघुकुल तिलक - भैरोंसिंह शेखावत
(c) ओ.पी. मेहरा - हीरालाल देवपुरा
(d) संपूर्णानंद - मोहनलाल सुखाड़िया

10. निम्नलिखित में से किसक़ी नियुक्ति राज्यपाल द्वारा नहीं की जाती है?
(a) राज्य का महाधिवक्ता
(b) राज्य का लोकायुक्त
(c) राज्य लोक सेवा आयोग का अध्यक्ष
(d) उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश

11. राज्यपाल के विशेष अभिभाषण का प्रावधान भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में किया गया है?
(a) अनुच्छेद 176 (b) अनुच्छेद 166
(c) अनुच्छेद 174 (d) अनुच्छेद 175

12. विवेकाधीन शक्तियों का प्रयोग करते समय राज्यपाल किसके प्रतिनिधि के तौर पर कार्य करता है?
(a) राज्य विधानमंडल (b) संघीय सरकार
(c) राज्य की जनता (d) मंत्रिपरिषद्

13. भारत के. संविधान में राज्यपाल की शक्तियों से सम्बन्धित अनुच्छेदों के सन्दर्भ में निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए

राज्यपाल की शक्ति	अनुच्छेद
(I) क्षमा दान की राज्यपाल की शक्ति	अनुच्छेद 162
(II) अध्यादेश प्रख्यापित करने की शक्ति	अनुच्छेद 214
(III) विधेयकों पर अनुमति	अनुच्छेद 200
(IV) राज्य के विधानमण्डल के सत्र, सत्रावसान और विघटन	अनुच्छेद 174

सही विकल्प चुनिये -
(a) (I), (II) एवं (III) सही हैं
(b) (I), (II), (III) एवं (IV) सही हैं
(c) (I) एवं (II) सही हैं
(d) (III) एवं (IV) सही हैं

14. राजस्थान विधानसभा में राज्यपाल के अभिभाषण के लिए धन्यवाद प्रस्ताव से सम्बन्धित निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही नहीं है ?
(a) मुख्यमंत्री द्वारा चयनित कोई सदस्य राज्यपाल के अभिभाषण के लिए धन्यवाद व्यक्त करने वाला प्रस्ताव प्रस्तुत कर सकेगा।
(b) प्रस्ताव का अनुमोदन मुख्यमंत्री द्वारा चयनित दूसरे सदस्य द्वारा किया जाएगा।
(c) ऐसे प्रस्ताव की सूचना पर प्रस्तावक व अनुमोदनकर्ता के हस्ताक्षर होंगे और यह मंत्री संसदीय कार्य विभाग के जरिए राजस्थान विधानसभा के प्रमुख सचिव को भेजी जाएगी। 5
(d) धन्यवाद प्रस्ताव पर ऐसे रूप में संशोधन प्रस्तुत किये जा सकेंगे जिसे मुख्यमंत्री उचित समझे ।

15. राजस्थान के राज्यपाल श्री हरिभाऊ किसनराव बागड़े के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है ?
(a) वे महाराष्ट्र विधानसभा के छह बार विधायक रह चुके हैं।
(b) इन्हें 2014 में महाराष्ट्र विधानसभा का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया ।
(c) वे महाराष्ट्र सरकार में खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री रह चुके हैं।
(d) उन्होंने 30 जून, 2024 को राजस्थान के राज्यपाल का पदभार ग्रहण किया ।

ANSWER KEY

1. [a]	2. [c]	3. [b]	4. [c]	5. [d]
6. [a]	7. [c]	8. [a]	9. [d]	10. [d]
11. [a]	12. [b]	13. [d]	14. [d]	15. [d]

♦ ♦ ♦ ♦

भारतीय इतिहास

सिंधु घाटी सभ्यता 01

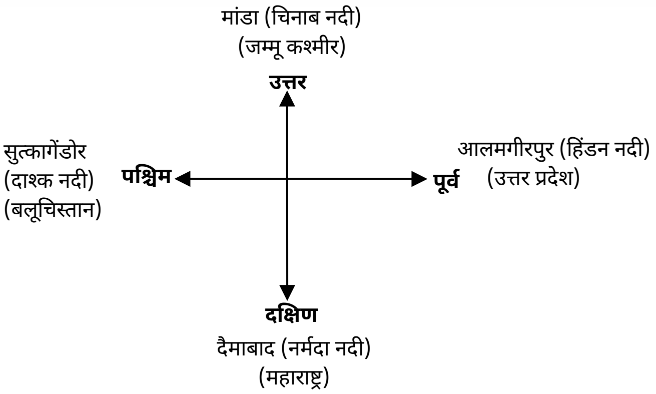

सैंधव सभ्यता की खोज -

क्रमांक	वर्ष	घटना/कार्य	संबंधित व्यक्ति/घटना
1	1842 ई.	हड़प्पा के नीचे प्राचीन सभ्यता होने की संभावना व्यक्त की।	चार्ल्स मैसन
2	1851-53 ई.	हड़प्पा के टीले का सर्वेक्षण किया।	अलेक्जेंडर कनिंघम
3	1856 ई.	हड़प्पा का मानचित्र जारी किया।	अलेक्जेंडर कनिंघम
4	1856 ई.	हड़प्पा के टीले से प्राप्त ईंटों का उपयोग लाहौर से कराची रेलवे लाइन बिछाने में किया गया।	जॉन बर्टन और विलियम बर्टन
5	1861 ई.	भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना की।	अलेक्जेंडर कनिंघम
6	1904 ई.	भारतीय पुरातत्व एवं सर्वेक्षण विभाग के अधीन भारत में प्राचीन इमारतों व नगरों के संरक्षण का आदेश जारी किया।	लॉर्ड कर्जन
7	1904 ई.	जॉन मार्शल ने भारतीय पुरातत्व विभाग के निदेशक के रूप में कार्यभार संभाला।	जॉन मार्शल
8	1921 ई.	हड़प्पा के टीले की खोज।	रायबहादुर दयाराम साहनी
9	1922 ई.	मोहनजोदड़ो की खोज।	राखालदास बनर्जी

सैंधव सभ्यता का काल निर्धारण-

– हड़प्पा सभ्यता के काल निर्धारण के संबंध में विद्वान एकमत नहीं है।
1. जॉन मार्शल के अनुसार 3250 - 2750 ई.पू.
2. अर्नेस्ट मैके के अनुसार 2800 - 2500 ई.पू.
3. माधोस्वरूप वत्स के अनुसार 3500 - 2700 ई.पू.
4. मार्टीमर ह्वीलर के अनुसार 2500 - 1500 ई.पू.
5. डी.पी. अग्रवाल व रोमिला थापर के अनुसार 2300 - 1750 ई. पू.

– रेडियो कार्बन (C-14) तिथि के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का सर्वमान्य काल 2300-1750 ई. पू. को माना जाता है।

सैंधव सभ्यता का विस्तार एवं क्षेत्र –

– सैंधव सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा (जम्मू) से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पश्चिम में सुत्कागेंडोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (मेरठ) तक है।

– वह उत्तर से दक्षिण लगभग 1400 किमी. तक तथा पूर्व से पश्चिम लगभग 1600 किमी. तक फैली हुई थी। अभी तक उत्खनन तथा अनुसंधान द्वारा करीब 2800 स्थल ज्ञात किये गए हैं।

– हड़प्पा सभ्यता के अंतर्गत पंजाब, सिंध, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के भाग आते हैं।

हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख स्थल-

स्थल	नदी/सागर तट	खोजकर्ता
हड़प्पा	रावी नदी	दयाराम साहनी
मोहनजोदड़ो	सिंधु नदी	राखालदास बनर्जी
लोथल	भोगवा नदी	एस. आर. राव
कालीबंगा	घग्घर नदी	अमलानन्द घोष
रोपड़	सतलज नदी	यज्ञदत्त शर्मा
कोटदीजी	सिंधु नदी	फजल अहमद खां
चन्हुदड़ो	सिंधु नदी	एन. जी. मजूमदार
आलमगीरपुर	हिन्डन नदी	यज्ञदत्त शर्मा
सुत्कागेंडोर	दाश्क नदी	ऑरेल स्टाइन
बनवाली	सरस्वती नदी	रवीन्द्र सिंह बिस्ट

सैंधव सभ्यता का आकार एवं नामकरण –

– सैंधव सभ्यता का वास्तविक स्वरूप त्रिभुजाकार था, परंतु वर्तमान में नवीन स्थल प्रकाश में आने के कारण अब इस का आकार विषमकोणिय चतुर्भुजाकार है।

– जॉन मार्शल 'सिंधु सभ्यता' नाम का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।

– सिंधु सभ्यता के विकास करने वाली जाति में सर्वाधिक मान्य मत है कि यहाँ की बहुसंख्यक जनता भूमध्यसागरीय प्रजाति की थी।

सैंधव सभ्यता की नगर योजना एवं विशेषताएँ –

क्रमांक	विशेषता	विवरण/उदाहरण
1	सभ्यता का काल	कांस्ययुगीन सभ्यता
2	प्रमुखता	प्रथम नगरीय सभ्यता
3	प्रमुख विशेषता	अद्भुत नगर नियोजन और जल निकासी प्रणाली
4	नगर का विभाजन	दो भागों में विभाजित – पूर्वी और पश्चिमी
5	पश्चिमी भाग (दुर्ग)	शासक वर्ग निवास करता था, चारों ओर दीवार से घिरा था।
6	पूर्वी भाग (निचला शहर)	सामान्य नागरिक, व्यापारी, कारीगर, श्रमिक निवास करते थे; दीवार से घिरा हुआ।
7	नगर योजना	ग्रिड पद्धति पर आधारित; सड़कें समकोण पर एक-दूसरे को काटती थी।
8	सड़कें और नालियाँ	मुख्य सड़कें उत्तर-दक्षिण दिशा में; सड़कों के किनारे ढकी हुई नालियाँ।
9	जल निकासी प्रणाली	छोटी नालियों से गंदा पानी बड़े नालों में जाता था।
10	नगरों का निर्माण	पक्की ईंटों से; कालीबंगा और रंगपुर में कच्ची ईंटों का उपयोग।
11	ईंटों का अनुपात	4:2:1
12	मकान	प्रत्येक मकान में रसोईघर, स्नानागार, कुएँ और नालियाँ थीं।
13	मकानों के दरवाजे	मुख्य सड़क की ओर न खुलकर गली में खुलते थे; दरवाजे किनारे पर होते थे।
14	सबसे बड़ी ईंट	मोहनजोदड़ो से प्राप्त।
15	नदी किनारे नगर	हड़प्पा नगर नदियों के किनारे स्थित थे।
16	समानता	हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की नगर योजना लगभग समान थी।

सैंधव सभ्यता के प्रमुख स्थल –

हड़प्पा-

- **स्थान-** पाकिस्तान, पंजाब (रावी नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1921, दयाराम साहनी।
- **अवशेष-**
  - उर्वरा देवी की मृणमूर्ति।
  - कब्रिस्तान R-37।
  - विशाल अन्नागार।
  - काँसे का दर्पण, श्रृंगार पेटी।
  - मानव-बकरे के शवाधान के साक्ष्य।
  - सर्वाधिक अलंकृत मोहरें।

मोहनजोदड़ो-

- **स्थान-** पाकिस्तान, सिंध (सिंधु नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1922, राखालदास बनर्जी।
- **अवशेष-**
  - विशाल स्नानागार।
  - विशाल अन्नागार।
  - काँसे की नर्तकी।
  - पशुपतिनाथ शिव की मूर्ति।
  - सर्वाधिक मोहरें।
  - मानव कंकाल।

लोथल-

- **स्थान-** गुजरात, अहमदाबाद (भोगवा नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1954, एस. आर. राव।
- **अवशेष-**
  - गोदीबाड़ा (बंदरगाह)।
  - मनके बनाने का कारखाना।
  - माप-तौल का पैमाना।
  - अग्निवेदिकाएँ।
  - फ़ारस की मोहरें।

कालीबंगा-

- **स्थान-** राजस्थान, हनुमानगढ़ (घग्घर नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1953, अमलानंद घोष।
- **अवशेष-**
  - जोते हुए खेत।
  - ऊँट के प्रथम साक्ष्य।
  - हल की आकृति।
  - हवनकुंड।
  - भूकंप के साक्ष्य।

चन्हुदड़ो-

- **स्थान-** पाकिस्तान, सिंध।
- **खोज-** 1931, एन. जी. मजूमदार।
- **अवशेष-**
  - वक्राकार ईंटें।
  - सौंदर्य प्रसाधन।
  - हाथी का खिलौना।
  - पित्तल की इक्का गाड़ी।

बनवाली-

- **स्थान-** हरियाणा, हिसार (सरस्वती नदी के किनारे)।
- **खोज-** 1973-74, रवींद्र सिंह बिष्ट।
- **अवशेष-**
  - मिट्टी के खिलौने (हल)।
  - जौ, तिल, सरसों के ढेर।

धौलावीरा-

- **स्थान-** गुजरात, कच्छ (खड़ी द्वीप)।
- **खोज-** 1967-68, जगपति जोशी।
- **अवशेष-**
  - तीन भागों में विभाजित नगर।
  - जल संरक्षण प्रणाली।
  - स्टेडियम।
  - सूचना पट्ट (पॉलिशदार सफेद पत्थर)।

अन्य स्थल-

1. **सुरकोटदा (गुजरात)-** घोड़े की हड्डियाँ।
2. **आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश)-** सबसे पूर्वी स्थल।
3. **रोपड़ (पंजाब)-** मानव कब्र के नीचे कुत्ते का शव।
4. **राखीगढ़ी (हरियाणा)-** भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाई स्थल।

मुख्य तथ्य-

- सभ्यता काल- 2500-1750 ई.पू।
- लिपि- चित्रलिपि (अब तक अपठनीय)।
- प्रमुख नदी- सिंधु और उसकी सहायक नदियाँ।
- प्रमुख धातु- तांबा, कांसा।
- मृत्यु कारण- बाढ़, सूखा, आक्रमण, जलवायु परिवर्तन।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(a) आलमगीरपुर - उत्तर प्रदेश
(b) लोथल - गुजरात
(c) कालीबंगा - हरियाणा
(d) रोपड़ - पंजाब

2. हड़प्पा सभ्यता के निम्नलिखित किस नगर में चिनाई के कार्य में तक्षित प्रस्तर का प्रयोग कच्ची ईंटों के साथ किया जाता था?
(a) हड़प्पा (b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल (d) धौलावीरा

3. हड़प्पा सभ्यता में निम्नलिखित में किसकी जानकारी नहीं थी?
(a) ढेकली (b) कुआं
(c) नहर (d) कुएं पर पुल्ली

4. निम्नलिखित में किसकी जानकारी हड़प्पा सभ्यता काल में नहीं थी?
(a) पक्की ईंटें (b) दीवारों की इंग्लिश बांड प्रणाली
(c) घोड़िया छत (d) वैज्ञानिक तरीके से बनाई गई मेहराब

5. निम्नलिखित में उस क्षेत्र की पहचान कीजिए जहां सिंधु सभ्यता के पुरास्थल नहीं मिले हैं-
(a) बलूचिस्तान (b) उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती प्रांत का पहाड़ी क्षेत्र
(c) निम्न हिमालय क्षेत्र (d) उत्तरी महाराष्ट्र

6. मेसोपोटामिया के साहित्य में निम्नलिखित में से किस स्थान का संदर्भ हड़प्पा सभ्यता के लिए अभिप्रेत रहा होगा?
(a) मर्हीषि (b) दिलमुन
(c) मेलुहा (d) मकान

7. हड़प्पा लिपि के बारे में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?
(a) कुछ ऐसे उदाहरण भी उपलब्ध हैं कि यह लिपि बाईं ओर से दाईं ओर को लिखी जाती है।
(b) हड़प्पा लिपि शब्दाक्षरिक है, अर्थात् प्रत्येक प्रयुक्त प्रतीक किसी शब्द या शब्दांश के लिए होता है।
(c) यह सामान्य रूप से दाईं ओर से बाईं ओर पढ़ने के लिए लिखी जाती है।
(d) लेखन के सबसे लंबे प्रतिरूप में 30 संकेत हैं।

8. निम्नलिखित में से कौन-सा हड़प्पा स्थल हरियाणा में स्थित नहीं है?
(a) रोपड़ (b) बनावली
(c) राखीगढ़ी (d) मिताथल

9. सैन्धव सभ्यता का कौन-सा स्थल समुद्र व्यापार का मुख्य केंद्र माना जाता था?
(a) कालीबंगा (b) हड़प्पा
(c) धौलावीरा (d) लोथल

10. निम्नलिखित में से किस पुरास्थल के दुर्ग में 'सात अग्नि कुण्ड' प्राप्त हुए हैं?
(a) हड़प्पा (b) मोहनजोदड़ो
(c) लोथल (d) कालीबंगा

11. निम्नलिखित हड़प्पाकालीन स्थलों में से किसमें नाली के निर्माण में लकड़ी का प्रयोग किया गया है?
(a) लोथल (b) राखीगढ़ी
(c) कालीबंगा (d) आलमगीरपुर

12. एक मुद्रा पर एक व्यक्ति बाघ से लड़ता हुआ अंकित है, यह किस हड़प्पन स्थल से प्राप्त हुई है?
(a) मोहनजोदड़ो (b) राखीगढ़ी
(c) कालीबंगा (d) बणावली

13. हड़प्पा संस्कृति के किस स्थल से मध्य नगर का प्रमाण मिला है?
(a) कालीबंगा (b) राखीगढ़ी
(c) सुत्कागेंडोर (d) बनावली

14. सैंधव सभ्यता के सबसे पूर्वी स्थल (आलमगीरपुर) का उत्खनन किया गया था-
(a) वाई. डी. शर्मा द्वारा (b) ए. घोष द्वारा
(c) बी. के. थापर द्वारा (d) बी. बी. लाल द्वारा

15. सूची-I में उल्लिखित स्थलों को सूची-II में उल्लिखित तथ्यों से सुमेलित कीजिए तथा सूचियों के नीचे दिए गए कूट में से सही विकल्प का चयन कीजिए-

सूची-I	सूची-II
A. हड़प्पा	1. शवाधान
B. लोथल	2. गोदीबाड़ा
C. कालीबंगा	3. एक नर्तकी की आकृति
D. मोहनजोदड़ो	4. जुता हुआ खेत

कूट-

	A	B	C	D
(a)	1	2	3	4
(b)	3	4	1	2
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	4	3

16. सिंधु घाटी की लिपि की सूचना प्राप्त होती है-
(a) आभूषणों से (b) मूर्तियों से
(c) मोहरों से (d) खिलौनों से

17. भारतीय उप-महाद्वीप के किस भाग में हड़प्पा संस्कृति का उदय हुआ?
(a) पूर्वी (b) पश्चिमी
(c) उत्तर-पश्चिमी (d) दक्षिण-पूर्वी

18. मांडा का पुरातात्विक स्थल, जो भारत की सीमा के अंतर्गत हड़प्पा संस्कृति के सबसे उत्तरी छोर को चिह्नित करता है, किस नदी पर स्थित है?
(a) झेलम (b) चिनाब
(c) घग्घर (d) सिंधु

ANSWER KEY

01. [c]	02. [d]	03. [d]	04. [d]	05. [d]
06. [c]	07. [d]	08. [a]	09. [d]	10. [d]
11. [c]	12. [a]	13. [a]	14. [a]	15. [d]
16. [c]	17. [c]	18. [b]		

♦ ♦ ♦ ♦

भारत का भूगोल

स्थिति एवं विस्तार 01

भौगोलिक स्थिति:

- उत्तर में हिमालय, दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी, दक्षिण पश्चिम में अरब सागर।
- भारत का कुल क्षेत्रफल **32,87,263 वर्ग किमी** (विश्व का **2.42%**)।
- लंबाई: उत्तर से दक्षिण **3214 किमी**, पूर्व से पश्चिम **2933 किमी**।
- क्षेत्रफल में भारत विश्व का **7वां सबसे बड़ा देश**।

स्थिति:

- **अक्षांशीय** विस्तार: 8°4′N से 37°6′N
- **देशांतरीय विस्तार:** 68°7′E से 97°25′E
- **दक्षिणतम बिंदु:** इंदिरा पॉइंट (6°45′N), अंडमान निकोबार।
- **उत्तरी बिंदु:** इंदिरा कॉल, गिलगित।
- **मुख्य भूमि का दक्षिणतम बिंदु:** कन्याकुमारी।
- **पूर्वी बिंदु:** किबिथू वालांग (अरुणाचल प्रदेश)।
- **पश्चिमी बिंदु:** गोहरमाता (कच्छ, गुजरात)।

कर्क रेखा:

- भारत के **8 राज्यों** (गुजरात, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, मिज़ोरम) से गुजरती है।
- सबसे कम लंबाई राजस्थान में, सबसे अधिक मध्य प्रदेश में।
- पास के प्रमुख शहर: गांधीनगर, भोपाल, उज्जैन, रांची, अगरतला।

मानक समय:

- 82°30′ पूर्वी देशांतर रेखा (नैनी, मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश से गुजरती)।
- भारतीय मानक समय (IST), ग्रीनविच माध्य समय (GMT) से **5 घंटे 30 मिनट आगे**।
- यह रेखा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, ओडिशा, आंध्र प्रदेश से गुजरती है।

भारत की सीमाएँ –

स्थलीय और तटीय सीमा:

- **स्थलीय सीमा:** 15,200 किमी।
- **मुख्य भूमि की तटीय सीमा:** 6,100 किमी।
- **कुल तटीय सीमा (अंडमान-**निकोबार **व लक्षद्वीप सहित):** 7,516.6 किमी।
- **कुल सीमा (स्थलीय + जलीय):** 22,716.6 किमी।
- **सर्वाधिक तटीय सीमा:** गुजरात, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु।
- **न्यूनतम तटीय सीमा:** गोवा, कर्नाटक।

अंतर्राष्ट्रीय सीमा:

- तीन ओर समुद्र: अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर।
- द्वीप समूह: अंडमान-निकोबार (बंगाल की खाड़ी) और लक्षद्वीप (अरब सागर)।

महत्वपूर्ण सीमाएँ:

- **रेडक्लिफ सीमा:** 3,323 किमी। 1947 में सर साइरिल रेडक्लिफ द्वारा भारत-पाकिस्तान सीमा निर्धारित।
- **मैकमोहन रेखा:** 3,488 किमी। 1914 में सर हेनरी मैकमोहन द्वारा भारत-चीन सीमा।
- **डूरण्ड रेखा:** 106 किमी। 1893 में सर मोर्टिसुर डूरण्ड द्वारा भारत-अफगानिस्तान सीमा। 1947 के बाद यह पाकिस्तान-अफगानिस्तान सीमा बनी।
- **भारत-म्यांमार सीमा:** सीमा लंबाई: 1,643 किमी। प्रमुख पर्वत: अराकान योमा, पटकोई, नागा, मिसीपी।

पूर्वोत्तर राज्य ("सात बहनें"):

- अरुणाचल प्रदेश, असम, त्रिपुरा, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम।
- सिक्किम: केवल पश्चिम बंगाल से सीमा।
- मेघालय: केवल असम से सीमा।
- त्रिपुरा: तीन ओर से बांग्लादेश से घिरा।
- सिक्किम: तीन तरफ से अंतर्राष्ट्रीय सीमा।

देश की सीमा पर स्थित राज्य इस प्रकार से है–

1. बांग्लादेश के साथ कुल सीमा 4096.7 किमी. है, इस सीमा पर पश्चिम बंगाल (सर्वाधिक), असम (न्यूनतम), मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्य स्थित है।
2. चीन के साथ कुल सीमा 3488 किमी. है, इस सीमा पर लद्दाख, (सर्वाधिक), हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश राज्य स्थित है।
3. पाकिस्तान के साथ कुल सीमा 3323 किमी. है, इस सीमा पर जम्मू और कश्मीर व लद्दाख (सर्वाधिक), पंजाब (न्यूनतम), राजस्थान, गुजरात राज्य स्थित है।
4. अफगानिस्तान के साथ कुल सीमा 106 किमी. है, लद्दाख इस सीमा पर स्थित है।
5. नेपाल के साथ कुल सीमा 1751 किमी. है, उत्तर प्रदेश (सर्वाधिक), प. बंगाल (न्यूनतम), उत्तराखण्ड, बिहार, सिक्किम इस सीमा पर स्थित है।
6. म्यांमार के साथ कुल सीमा 1643 किमी. है, अरुणाचल प्रदेश (सर्वाधिक), नागालैण्ड (न्यूनतम), मणिपुर, मिजोरम इस सीमा पर स्थित है।
7. भूटान के साथ कुल सीमा 699 किमी. है, असम (सर्वाधिक), सिक्किम (न्यूनतम), अरुणाचल प्रदेश, पं. बंगाल इस सीमा पर स्थित है।

भारत की जलीय सीमा–

- **9° चैनल –** मिनिकॉय एवं लक्षद्वीप के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **10° चैनल –** अण्डमान (लिटिल अण्डमान) एवं निकोबार (कार निकोबार) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **6° चैनल (ग्रेट चैनल) –** सुमात्रा (इण्डोनेशिया) तथा ग्रेट निकोबार (अण्डमान निकोबार भारत) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **8° चैनल –** मालदीव एवं मिनाकॉय (लक्षद्वीप) के मध्य सीमा निर्धारण करता है।

- **16° उत्तरी अक्षांश रेखा–** यह सह्याद्रि पर्वतमाला को दो बराबर भागों में बाँटती है।
- **24° उत्तरी अक्षांश रेखा** – यहाँ पर भारत व पाकिस्तान के मध्य सरक्रीक सीमा विवाद है।
- **डक्कन पास** – लघु अण्डमान एवं दक्षिण अण्डमान के मध्य सीमा निर्धारण करता है।
- **कोको चैनल** – लैंडफॉल द्वीप (उत्तरी अण्डमान) एवं कोको द्वीप (म्यांमार) के मध्य।

पाक जल संधि –

- यह भारत व श्रीलंका के मध्य स्थित है, जो मन्नार की खाड़ी को बंगाल की खाड़ी से जोड़ती है।
- भारत के तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य आदम ब्रिज स्थित है। आदम ब्रिज की शुरुआत धनुष्कोडी नामक स्थान से होती है। पम्बन द्वीप (रामेश्वरम्) इसी ब्रिज का हिस्सा है, इसे रामसेतु भी कहा जाता है।

मन्नार की खाड़ी–

- (तमिलनाडु)– यह दक्षिण पूर्व तमिलनाडु व श्रीलंका के मध्य स्थित है।

भारत के राज्य व केन्द्रशासित प्रदेश –

- वर्तमान में भारत में 28 राज्य व 8 केन्द्रशासित प्रदेश है।
- जनसंख्या के दृष्टिकोण से उत्तर प्रदेश भारत का सबसे बड़ा राज्य तथा सिक्किम सबसे छोटा राज्य है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है तथा गोवा सबसे छोटा राज्य है।
- कच्छ (गुजरात) भारत का सबसे बड़ा जिला तथा माहे (पुडुचेरी) भारत का सबसे छोटा जिला है।
- जम्मू कश्मीर, दिल्ली व पुडुचेरी भारत के केवल तीन केन्द्र शासित प्रदेश ऐसे है, जिनमें विधानसभा है।
- उत्तर प्रदेश का सोनभद्र देश का एकमात्र ऐसा जिला है जो चार राज्यों (छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड) की सीमा को स्पर्श करता है।

अभ्यास प्रश्न

1. भारत अवस्थित है-
(a) अक्षांश 8°4' उ. से 37°6' द. तथा देशांतर 68°7' पू. से 97°25' प. के मध्य
(b) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' उ. तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' पू. के मध्य
(c) अक्षांश 8°4' उ. से 37°6' उ. तथा देशांतर 68°07' पू. से 97°25' पू. के मध्य
(d) अक्षांश 8°4' द. से 37°6' द. तथा देशांतर 68°7' प. से 97°25' प. के मध्य

2. निम्नलिखित देशांतरों में कौन-सी भारत की "प्रामाणिक मध्याह्न रेखा' कहलाती है?
(a) 85°30' पूर्वी (b) 87°30 पूर्वी
(c) 84°50' पूर्वी (d) 82°30° पूर्वी

3. 82°30’ पूर्वी देशान्तर और कर्क-रेखा का मिलन बिन्दु है -
(a) महाराष्ट्र में (b) आन्ध्र प्रदेश में
(c) उत्तर प्रदेश में (d) छत्तीसगढ़ में

4. भारत का सुदूर पश्चिम का बिन्दु है –
(a) 68°7' पश्चिम, राजस्थान में
(b) 68°7' पश्चिम, गुजरात में
(c) 68°7' पूर्व, गुजरात में
(d) 68°7' पूर्व, राजस्थान में

5. निम्नलिखित कथनों में से कौन-से भारत के बारे में सही हैं?
1. भारत विश्व का पाँचवाँ बड़ा देश है।
2. यह स्थलमण्डल के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.4 प्रतिशत भाग अधिकृत किए हुए हैं।
3. समूचा भारत उष्ण कटिबंध में स्थित है।
4. 82°30' पूर्वी देशान्तर का उपयोग भारतीय मानक समय को निर्धारित करने के लिए किया जाता है।
कूट-
(a) केवल 2 व 3 (b) केवल 1 व 2
(c) केवल 1 व 3 (d) केवल 2 व 4

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-
1. असम, भूटान तथा बांग्लादेश की सीमाओं से लगा हुआ।
2. पश्चिम बंगाल, भूटान तथा नेपाल की सीमाओं से लगा हुआ है।
3. मिजोरम, बांग्लादेश तथा म्यांमार की सीमाओं से लगा हुआ है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(a) केवल 1 व 2 (b) केवल 2 व 3
(c) केवल 1 व 3 (d) उपर्युक्त सभी

7. म्यांमार की सीमा के सहारे भारत के राज्यों का उत्तर से दक्षिण का सही क्रम क्या है?
(a) अरुणाचल प्रदेश, असम, नागालैण्ड, मणिपुर
(b) अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
(c) असम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम
(d) अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैण्ड, मिजोरम

8. 24° चैनल किन दो देशों के मध्य स्थित हैं?
(a) भारत-मालदीव (b) भारत-इण्डोनेशिया
(c) भारत-पाकिस्तान (d) भारत-श्रीलंका

9. निम्नलिखित में से असत्य कथन की पहचान कीजिए-
(a) भारत की उत्तर से दक्षिण तक लंबाई 3214 किमी. है।
(b) भारत की पूर्व से पश्चिम तक चौड़ाई 2933 किमी. है।
(c) भारत उत्तर-पश्चिम गोलार्द्ध में स्थित है।
(d) भारत की तटरेखा की लंबाई 7516.6 किलोमीटर है।

10. गारो, खासी एवं जयन्तियाँ पहाड़ियाँ संरचना एवं उत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित में से किसका भाग है?
(a) हिमालय पर्वत श्रेणी का (b) अरावली पर्वत श्रेणी का
(c) अराकानयोमा पर्वत का (d) प्रायद्वीपीय पठार का

ANSWER KEY

1. [c]	2. [d]	3. [d]	4. [c]	5. [d]
6. [d]	7. [b]	8. [c]	9. [c]	10. [d]

♦♦♦♦

भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था

भारतीय संविधान एवं उसकी विशेषताएँ 01

संविधान की मांग:

- **बाल गंगाधर तिलक (1895)**:
  संविधान निर्माण की पहली मांग "स्वराज विधेयक" द्वारा तिलक ने की।
- **होमरूल लीग (1916)**:
  इस आंदोलन के माध्यम से अंग्रेजों से घरेलू शासन संचालन की मांग की गई।
- **गांधीजी की मांग (1922)**:
  गांधीजी ने प्रबलत्म तरीके से संविधान सभा और संविधान निर्माण की मांग की।
- **नेहरू रिपोर्ट (1928)**:
  पं. मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में ब्रिटिश भारत का पहला लिखित संविधान तैयार किया। इसमें मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों के अधिकारों, अखिल भारतीय संघ के प्रावधान शामिल थे। इसका विरोध मुस्लिम लीग और रियासतों के राजाओं ने किया।
- **कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन (1929)**:
  जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज्य की मांग की गई।
- **मानवेन्द्रनाथ रॉय (1934)**:
  व्यक्तिगत रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की।
- **फैजपुर अधिवेशन (1936)**:
  कांग्रेस के मंच से संविधान सभा द्वारा संविधान निर्माण की मांग की गई।
- **अगस्त प्रस्ताव (1940)**:
  ब्रिटिश सरकार ने संविधान सभा की मांग स्वीकार की, लेकिन कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने इसे अस्वीकार कर दिया।
- **क्रिप्स मिशन (1942)**:
  द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उत्तरदायी शासन की वचनबद्धता दी गई, लेकिन इसे कांग्रेस, लीग और गांधीजी ने नामंजूर कर दिया।
- **शिमला सम्मेलन (1945)**:
  लॉर्ड वेवेल द्वारा बुलाया गया सम्मेलन, जो किसी तार्किक नतीजे पर नहीं पहुंचा।
- **कैबिनेट मिशन (1946)**:
  ब्रिटिश सरकार ने संविधान सभा के गठन की योजना बनाई। इसके अनुसार संविधान सभा के सदस्य अंशत: निर्वाचित और अंशत: नामित होने थे।
- कुल सदस्य संख्या: 389
- 296 सदस्य ब्रिटिश भारत से, 93 सदस्य देशी रियासतों से।
- सीटों का बंटवारा जनसंख्या के आधार पर किया गया।

संविधान सभा का गठन:

1. **चुनाव (जुलाई-अगस्त 1946)**:
- संविधान सभा के 296 सीटों पर चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस को 208 सीटें, मुस्लिम लीग को 73 सीटें और अन्य को 15 सीटें मिलीं।
- देशी रियासतों को आवंटित 93 सीटें रिक्त रही।

2. **संविधान सभा की घोषणा**:
- नवम्बर, 1946 में वायसराय ने संविधान सभा के गठन की घोषणा की।
- **पहली बैठक**: 9 दिसम्बर, 1946 को हुई। मुस्लिम लीग ने बहिष्कार किया।
- 207 सदस्य उपस्थित हुए, जिनमें 10 महिलाएं शामिल थीं।
- आचार्य कृपलानी के प्रस्ताव पर डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा को अस्थायी अध्यक्ष नियुक्त किया गया।
- 11 दिसम्बर, 1946 को डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को स्थायी अध्यक्ष चुना गया।
- उपाध्यक्ष: एस.सी. मुखर्जी (ब्रिटिश भारत के) और वी.टी. कृष्णमाचारी (देशी रियासतों के) बने।
- संवैधानिक सलाहकार: बी.एन. राव और सचिव: एच.वी.आर. आयंगर थे।

दल	सीटें
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस	208
मुस्लिम लीग	73
अनुसूचित जाति फेडरेशन	1
कृषक प्रजा पार्टी	1
यूनियनिस्ट पार्टी	1
यूनियनिस्ट अनुसूचित जाति	1
यूनियनिस्ट मुस्लिम	1
कम्युनिस्ट पार्टी	1
गैर-कांग्रेसी सिख	1
स्वतंत्र	8
कुल	**296**

समुदाय	सीटें
हिन्दू	163
मुस्लिम	80
अनुसूचित जाति	31
पिछड़ी जनजातियाँ	6
भारतीय ईसाई	6
सिख	4
एंग्लो-इंडियन	3
पारसी	3
कुल	**296**

विभाजन के पश्चात् संविधान सभा के सीटों की स्थिति-

प्रांत	सीटें
भारतीय प्रांत	229
देशी रियासतें	70
कुल	**299**

उद्देश्य प्रस्ताव (Objective Resolution)

- 13 दिसंबर, 1946 को पंडित जवाहर लाल नेहरू के द्वारा संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

- संविधान सभा के द्वारा 22 जनवरी, 1947 को उद्देश्य प्रस्ताव को पारित किया गया।
- उद्देश्य प्रस्ताव में उल्लेख था कि भारत एक स्वतंत्र एवं संप्रभु गणराज्य है।
- संप्रभु एवं स्वतंत्र भारत तथा इसके संविधान की समस्त शक्तियाँ सत्ता का स्रोत भारत की जनता है।

संविधान सभा की समितियाँ

- संविधान सभा ने संविधान के निर्माण से संबंधित कई समितियों का गठन किया।
- इनमें से 8 बड़ी समितियाँ थीं तथा अन्य छोटी।

समितियाँ के अध्यक्ष -

- 1. संघ शक्ति समिति - जवाहरलाल नेहरू।
  2. संघीय संविधान समिति - जवाहरलाल नेहरू।
  3. प्रांतीय संविधान समिति - सरदार पटेल।
  4. प्रारूप समिति - डॉ. बी.आर. अम्बेडकर।
  5. मौलिक अधिकारों एवं अल्पसंख्यकों संबंधी परामर्श समिति – सरदार पटेल। इसमें दो उप समितियाँ थी-
  a. मौलिक अधिकार उप समिति - जे.बी. कृपलानी।
  b. अल्पसंख्यक उप समिति – एच.सी. मुखर्जी।
  6. प्रक्रिया नियम समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।
  7. राज्यों के लिये समिति (राज्यों से समझौता करने वाली) - जवाहर लाल नेहरू।
  8. संचालन समिति - डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

प्रारूप समिति (Drafting Committee) -

- इस समिति का गठन 29 अगस्त, 1947 को हुआ था।
- 30 अगस्त, 1947 को प्रारूप समिति की प्रथम बैठक हुई एवं इसी बैठक में डॉ. बी.आर. अंबेडकर को अध्यक्ष बनाया गया।
- इस समिति में सात सदस्य थे-
  1. डॉ. बी.आर. अंबेडकर (अध्यक्ष)
  2. एन. गोपाल स्वामी आयंगर।
  3. अल्लादी कृष्ण स्वामी अय्यर।
  4. डॉ. के.एम. मुंशी।
  5. सैयद मोहम्मद सादुल्ला।
  6. एन. माधव राव (बी.एल. मित्र के त्याग-पत्र के पश्चात्)
  7. टी.टी. कृष्णामाचारी (डी.पी. खेतान की मृत्यु के पश्चात्)

संविधान सभा के कार्य–

अध्यक्षता:

- संविधान निर्माण में **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** और विधायिका में **गणेश वासुदेव मावलंकर** ने अध्यक्षता की।

संविधान पर हस्ताक्षर:

- **284** सदस्यों ने हस्ताक्षर किए। पहले हस्ताक्षर करने वाले **जवाहरलाल** नेहरू थे और राजस्थान से **बलवंत सिंह मेहता** ने हस्ताक्षर किए।

संविधान का अंतिम प्रारूप:

- **बी.आर. अंबेडकर** ने **4 नवंबर, 1948** को प्रारूप पेश किया, जो **26 नवंबर, 1949** को पारित हुआ।

26 नवंबर, 1949:

- **16 अनुच्छेद** पारित किए गए और कुछ प्रावधान तत्काल लागू हुए।
- संविधान में **395 अनुच्छेद** और **8 अनुसूचियाँ** थीं।

संविधान लागू होना:

- संविधान 26 **जनवरी, 1950** को लागू हुआ, जो गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राष्ट्रगान और राष्ट्रीय गीत:

1. **राष्ट्रगान:** रचनाकार रवीन्द्रनाथ **टैगोर**, **24 जनवरी, 1950** को अपनाया।
2. **राष्ट्रीय गीत:** रचनाकार **बंकिम चन्द्र चटर्जी**, **24 जनवरी, 1950** को अपनाया।

अन्य तथ्य:

1. **राष्ट्रीय ध्वज** को 22 **जुलाई, 1947** को अपनाया गया।
2. **हिन्दी को राजभाषा 14 सितम्बर, 1949** को स्वीकृत किया गया।
3. संविधान बनाने में **2 साल, 11 माह और 18 दिन** का समय लगा।

संविधान के स्रोत

- संविधान सभा ने संविधान बनाने से पहले विश्व के अन्य देशों में बने हुए संविधान का अध्ययन किया और उसका मूल्यांकन किया।
- विदेशी संविधानों से लिए प्रावधानों में भारत देश के अनुकूल परिवर्तन करके उन्हें भारतीय संविधान में शामिल किया गया।
- भारत के संविधान में अधिकतर उपबंध विश्व के विभिन्न देशों के संविधानों से प्रभावित हैं लेकिन इस पर सबसे ज्यादा प्रभाव भारतीय शासन अधिनियम, 1935 का पड़ा।
- संविधान के प्रमुख स्रोत निम्नलिखित हैं-

स्रोत	विशेषताएँ
भारत सरकार अधिनियम 1935 (मुख्य स्रोत)	संघीय तंत्र, राज्यपाल का कार्यालय, लोक सेवा आयोग, न्यायपालिका, आपातकालीन प्रावधान
ब्रिटिश संविधान	सरकार का संसदीय स्वरूप, कानून का शासन, विधायी प्रक्रिया, परमाधिकार रिट/लेख, एकल नागरिकता, द्विसदनात्मक व्यवस्था कैबिनेट /मंत्रिमंडलीय प्रणाली, संसदीय विशेषाधिकार
अमेरिकी संविधान	मौलिक अधिकार, राष्ट्रपति पर महाभियोग, उपराष्ट्रपति का पद, सर्वोच्च न्यायालय या उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को हटाने का प्रावधान, न्यायपालिका की स्वतंत्रता, न्यायिक समीक्षा व न्यायिक पुनरवलोकन का सिद्धांत
आयरलैंड संविधान	राज्य नीति के निदेशक सिद्धांत, राज्यसभा के 12 सदस्यों का नामांकन, राष्ट्रपति के चुनाव का तरीका
कनाडा का संविधान	सरकार का एक अर्द्ध-संघीय रूप (मजबूत केंद्र वाला संघ), केंद्र द्वारा

	राज्य में राज्यपालों की नियुक्ति, सर्वोच्च न्यायालय का सलाहकार क्षेत्राधिकार, अवशिष्ट शक्तियों का केंद्र में निहित होना
जर्मनी का संविधान	आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों का निलंबन
ऑस्ट्रेलियाई संविधान	समवर्ती सूची, संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक का प्रावधान, व्यापार और वाणिज्य की स्वतंत्रता।
सोवियत संघ संविधान	मौलिक कर्तव्य, प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय का आदर्श
फ्रांस संविधान	प्रस्तावना में गणतंत्र, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श
दक्षिण अफ्रीका का संविधान	संविधान संशोधन की प्रक्रिया, राज्यसभा के सदस्यों की चुनाव प्रक्रिया
जापान का संविधान	कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया।

संविधान की अनुसूचियाँ

अनुसूची	विषय – वस्तु
पहली	राज्यों के नाम और उनका क्षेत्रीय क्षेत्राधिकार केंद्रशासित प्रदेशों के नाम और उनका विस्तार
दूसरी	निम्नलिखित पदाधिकारियों की परिलब्धियाँ, भत्ते, विशेषाधिकार आदि से संबंधित प्रावधान - i. भारत के राष्ट्रपति ii. राज्यों के राज्यपाल iii. लोकसभा के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष iv. राज्यसभा के सभापति और उप सभापति v. राज्य विधानसभाओं के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष vi. राज्य विधान परिषदों के सभापति और उप सभापति vii. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश viii. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश xi. भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक
तीसरी	विभिन्न पदाधिकारियों के लिए शपथ और प्रतिज्ञान के प्रारूप - i. संघ के मंत्री ii. संसदीय निर्वाचन के अभ्यर्थी iii. संसद के सदस्य iv. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश v. भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक vi. राज्य के मंत्री vii. राज्य विधानमंडल के निर्वाचन के अभ्यर्थी viii. राज्य विधानमंडल के सदस्य xi. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश
चौथी	राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए राज्य सभा में सीटों का आवंटन
पाँचवीं	अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण के संबंध में प्रावधान
छठी	असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों में जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के संबंध में प्रावधान
सातवीं	संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची के अनुसार संघ और राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन।
आठवीं	संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाओं का उल्लेख (मूल रूप से 14 भाषाएँ और वर्तमान में 22 भाषाएँ)। ये भाषाएँ हैं- असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगू और उर्दू। 21वें संविधान संशोधन अधिनियम 1967 के द्वारा सिंधी (15वीं भाषा को शामिल किया गया। 71वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा नेपाली, मणिपुरी एवं कोंकणी भाषा शामिल की गई। 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली एवं संथाली भाषा को शामिल किया गया।
नौवीं	भू-सुधारों और जमींदारी प्रणाली के उन्मूलन से संबंधित राज्य विधानमंडलों और अन्य मामलों से संबंधित संसद के अधिनियम और विनियम। इस अनुसूची को पहले संविधान संशोधन अधिनियम, 1951 द्वारा जोड़ा गया है।
दसवीं	दल-बदल के आधार पर संसद और राज्य विधानमंडलों के सदस्यों की निरर्हता/अयोग्यता से संबंधित प्रावधान। इस अनुसूची को 52वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1985 द्वारा जोड़ा गया है।
ग्यारहवीं	पंचायतों की शक्तियों, प्राधिकार और उत्तरदायित्वों से संबंधित विषय का विवरण। इसमें 29 विषय हैं। इस अनुसूची को 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा जोड़ा गया है।
बारहवीं	नगर पालिकाओं की शक्तियों, प्राधिकार और उत्तरदायित्वों के विषय में विवरण। इसमें 18 विषय हैं। इस अनुसूची को 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा जोड़ा गया है।

हिन्दी

हिन्दी का सामान्य परिचय

- हिन्दी फ़ारसी/पारसी/ईरानी भाषा का शब्द है।
- सिन्धु नदी के पश्चिमी भाग में रहने वाले लोग 'स' को 'ह' उच्चारित करते थे और 'ध' को 'द' बोलते थे।

  इस प्रकार ईरानी लोग सिन्धु नदी को 'हिन्दु' नदी कहते थे, सिंधु नदी के पूर्व में रहने वाले भारतीय लोगों को हिन्दू कहते थे। आर्यों की भाषा हिन्दी कहलायी तथा सिन्धु नदी के पूर्व का भाग हिन्दुस्तान (सिन्धु + स्थान) कहलाया।

  सिन्धु - हिन्दु - हिन्दू - हिन्दी - हिन्दुस्तान
- भारतीय आर्यभाषाओं के इतिहास को तीन कालों खंडों में बाँटा गया है–

(1) प्राचीन भारतीय आर्य भाषा - 1500 ई. पू. - 500 ई.पू. तक
(2) मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा - 500 ई. पू. - 1000 ई. तक
(3) आधुनिक भारतीय आर्य भाषा - 1000 ई. - वर्तमान समय

संस्कृत

1. वैदिक संस्कृत (वेद, उपनिषद्) – 1500 ई. पू. - 1000 ई.पू.
2. लौकिक संस्कृत (रामायण, महाभारत) – 1000 ई.पू.- 500 ई.पू.

- **पालि** (बौद्ध ग्रंथ) - 500 ई.पू. - 1 ई.
- **प्राकृत** (जैन ग्रंथ) - 1 ई. - 500 ई.
- **अपभ्रंश** (शौरसेनी) - 500 ई. - 1000 ई.
- **हिन्दी** - 1000 ई. - वर्तमान समय
- हिन्दी का मानक समय - 1100 ई.

भाषा

- [भाष् (प्रकट करना) - संस्कृत]
- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अपने मन के भाव और विचारों को प्रकट करने के लिए जिस माध्यम का प्रयोग करता है, उसे 'भाषा' कहते हैं।

  विशेष– राजस्थानी भाषा दिवस - **21 फरवरी**

हिन्दी भाषा दिवस - 14 सितंबर

- संविधान के **भाग-17 के अनुच्छेद 343 से 351** में हिन्दी के <u>**राजभाषा**</u> होने से संबंधित उल्लेख किया गया है।
- **विशेष–** वर्तमान समय में **12 अनुसूची और 22 भाषाओं** में हिन्दी का भी स्थान है लेकिन हिन्दी को कहीं भी राष्ट्रभाषा के रूप में स्थान नहीं दिया गया है बल्कि राजभाषा के रूप में हिन्दी का उल्लेख किया गया है।

व्याकरण

- व्याकरण (वि + आ + करण) = 'भली भाँति समझना'
- व्याकरण एक ऐसा ग्रंथ है, जो किसी भाषा के शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन और शुद्ध प्रयोग का माध्यम होता है।
- व्याकरण के मूल रूप से तीन अंग होते हैं–

  (1) वर्ण विचार
  (2) शब्द विचार
  (3) वाक्य विचार
- भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- लिखित रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - वर्ण
- मौखिक रूप से भाषा की सबसे छोटी इकाई - ध्वनि
- अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - शब्द
- भावार्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई - वाक्य

वर्ण विचार

- भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण है। इसके और टुकड़े नहीं हो सकते। बोलने-सुनने में जो ध्वनि है, लिखने-पढ़ने में वह वर्ण है।
- वर्ण शब्द का प्रयोग ध्वनि और ध्वनि-चिह्न दोनों के लिए होता है। इस तरह वर्ण भाषा के मौखिक और लिखित दोनों रूपों के प्रतीक हैं। अतः हम वर्ण की परिभाषा इस प्रकार दे सकते हैं- 'वर्ण वह ध्वनि है जिसके और खंड नहीं किए जा सकते।'
- किसी भाषा के सभी वर्गों के व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध समूह को उसकी वर्णमाला कहते हैं।
- उस मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके टुकड़े न हो सकें, जैसे- क् ख् ग् घ् आदि। इनके टुकड़े नहीं किये जा सकते। इन्हें अक्षर भी कहते हैं। अत: वर्ण या अक्षर भाषा की मूल ध्वनियों को कहते हैं। जैसे- 'घट' पद में घ् अ ट् अ ये मूल ध्वनियाँ हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। इसी प्रकार अन्य पद भी समझिए, **जैसे**

  राम – र् + आ + म् + अ
  मोहन – म् + ओ + ह् + अ + न् + अ
  पुरुष – प् + उ + र् + उ + ष् + अ
  रमा – र् + अ + म् + आ
  गीता – ग् + ई + त् + आ

वर्ण के प्रकार

- हिंदी वर्णमाला में कुल वर्णों की संख्या 52 मानी गई हैं, जो निम्नानुसार है-

हिन्दी में कुल वर्णों की संख्या – 52				
स्वर 11	**अयोगवाह 2**	**व्यंजन 33**	**संयुक्ताक्षर 4**	**उत्क्षिप्त व्यंजन 2**
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ	अं, अः	क्, ख्, ग्, घ्, ङ्, च्, छ्, ज्, झ्, ञ्, ट् ठ्, ड्, ढ्, ण्, त्, थ्, द्, ध्, न्, प्, फ्, ब्, भ्, म्, य्, र्, ल्, व्, श्, ष्, स्, ह्।	क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्	ड़्, ढ़्

- ये वर्ण दो प्रकार के होते हैं-
  (I) स्वर (II) व्यंजन

I. स्वर (अच्) :

- जिन वर्णों या ध्वनियों का उच्चारण करने के लिए अन्य किसी वर्ण की सहायता नहीं लेनी पड़ती तथा जिन वर्गों के उच्चारण में हवा बिना किसी रुकावट के मुँह से बाहर आती है, स्वर कहलाते हैं।
- हिन्दी में स्वरों की संख्या 11 मानी गई हैं, ये हैं- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ।

स्वरों की मात्राएँ

- 'अ' को छोड़कर प्रत्येक स्वर की मात्रा होती है। जब स्वरों का व्यंजनों के साथ प्रयोग किया जाता है, तो उनकी मात्राओं का ही प्रयोग किया जाता है।

स्वरों का वर्गीकरण –

- उच्चारण काल अथवा मात्रा के आधार पर स्वर निम्नलिखित तीन प्रकार के माने गये हैं-

1. ह्रस्व स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में केवल एक मात्रा का समय लगे अर्थात् कम से कम समय लगे, ह्रस्व स्वर कहलाते हैं। इन्हें मूल स्वर भी कहते हैं।
- **जैसे-** अ, इ, उ। इनकी संख्या 3 है।

2. दीर्घ स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण समय में मूल स्वरों की अपेक्षा दुगुना समय, अर्थात् दो मात्राओं का समय लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं।
- **जैसे –** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऋ,। इनकी संख्या 8 है।

  नोट – ए, ओ, ऐ, औ ये मिश्रित स्वर हैं। ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं।

  जैसे – अ + इ = ए
  अ + ए = ऐ
  अ + उ = ओ
  अ + ऊ = औ

3. प्लुत स्वर –

- जिन स्वरों के उच्चारण में दीर्घ स्वरों से भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं। इनमें तीन मात्राओं का उच्चारण समय होता है। प्लुत का ज्ञान कराने के लिए ३ का अंक स्वर के आगे लगाते हैं। जैसे-अ ३, इ ३, उ ३, ऋ ३, लु ३, ए ३, ऐ ३, ओ ३, औ ३ !
- प्लुत स्वर का प्रयोग प्राय: दूर से बुलाने में किया जाता है।

अयोगवाह –

- हिन्दी में दो अयोगवाह ध्वनिया हैं- अं और अः।
- अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) दोनों ध्वनियाँ न स्वर हैं और न व्यंजन। इन दोनों के साथ योग नहीं है; अतः ये अयोगवाह कहलाती है।

अनुनासिक –

- जो स्वर मुख और नाक से बोले जाते हैं, वे अनुनासिक स्वर कहलाते हैं। इनके ऊपर चंद्र-बिंदु (ँ) लगाया जाता है। नाक की सहायता से बोले जाने के कारण इन्हें 'अनुनासिक' कहा जाता है; जैसे-गाँव, पाँच।

अनुस्वार –

- जिस स्वर का उच्चारण करते समय हवा नाक से निकलती है और उच्चारण कुछ जोर से किया जाता है तथा लिखते समय व्यंजन के ऊपर (ं) लगाया जाता है, उसे अनुस्वार कहते हैं। जैसे- कंठ, चंचल, मंच, अंधा, बंदर, कंधा।

II. व्यंजन

- जिन वर्गों का उच्चारण स्वरों की सहायता से होता है, वे व्यंजन कहलाते हैं। किसी व्यंजन का उच्चारण तभी किया जा सकता है, जब उसमें स्वर मिला हुआ हो। जिन ध्वनियों का उच्चारण करते समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख विवर या स्वर तंत्र के किसी भाग से टकरा कर घर्षण करती हुई या रुक कर बाहर निकलती है, उन्हें व्यंजन ध्वनियाँ कहते हैं।
- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजन होते हैं। जैसे-क्, ख्, ग् आदि।
- इनका उच्चारण स्वर लगाकर ही किया जा सकता है, जैसे क् + अ = क, ख् + अ = ख, ग् + अ = ग। स्वर रहित व्यंजन को उसके नीचे हल् ( ) चिह्न लगाकर लिखते हैं।

व्यंजनों का वर्गीकरण –

- प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों के भेद-

(i) स्पर्श व्यंजन

क वर्ग	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
च वर्ग	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
ट वर्ग	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
त वर्ग	त्	थ्	द्	ध्	न्
प वर्ग	प्	फ्	ब्	भ्	म्

(ii) अंतस्थ व्यंजन – य्, र्, ल्, व्

(iii) ऊष्म व्यंजन – श्, ष, स्, ह्

- हिन्दी वर्णमाला में 33 व्यंजनों के अतिरिक्त 4 संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन और 2 उत्क्षिप्त व्यंजन भी होते हैं।

(iv) संयुक्ताक्षर/संयुक्त व्यंजन – क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्

(v) उत्क्षिप्त व्यंजन – ड़, ढ़।

(vi) व्यंजन गुच्छ – दो या दो से अधिक व्यंजनों के संयोग से बने अक्षर को व्यंजन गुच्छ कहते हैं। ये निम्नलिखित रूप में होते हैं-

(क) संयुक्त व्यंजन – दो असमान व्यंजन संयुक्त होने पर अपना रूप बदल लेते हैं। जैसे – क् + ष् = क्ष्, ज् + ञ् = ज्ञ् , श् + र् = श्र्, त् + र् = त्र्, द् + य् = द्य्।

(ख) 'र' के विशिष्ट रूप –

(i) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है तो उस व्यंजन के शीर्ष पर स्थान पाता है। जैसे– धर्म, कर्म।

(ii) जब 'र' (स्वर रहित) किसी व्यंजन से पहले आता है। तो तिरक्षा (ˊ) रूप या (ˆ) रूप धारण कर लेता है। **जैसे**-प् + थ + म = प्रथम, क् + र + म = क्रम, ड् + र + म = ड्रम, रा + ष् + ट् + र् = राष्ट्र।

(ग) द्वित्व व्यंजन – दो समान व्यंजनों का साथ-साथ प्रयुक्त होना द्वित्व कहलाता है। जैसे – बच्चा, बब्बू, कच्ची, सम्मान आदि।

– 'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्रा

– 'र' पर 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ 'र' के नीचे नहीं बल्कि उसके सामने लगाई जाती हैं; जैसे –

– र + उ = रु ; र + ऊ = रू

अनुस्वार और अनुनासिक में अंतर

– उच्चारण करते समय जब वायु मुख के साथ-साथ नासिका से भी बाहर निकले, तो ऐसे स्वर अनुनासिक कहलाते हैं, जैसे-पाँच।

विसर्ग – विसर्ग (:) का प्रयोग केवल संस्कृत के शब्दों में ही किया है; जैसे- अतः, प्रातः, अंततः, फलतः आदि।

गृहीत ध्वनियाँ

– ऑ – इसका प्रयोग केवल अंग्रेजी के शब्दों में किया जाता है। यह 'आ' और 'ओ' के बीच की ध्वनि है।

जैसे—बॉल, कॉल, हॉल, डॉक्टर, डॉल आदि।

– 'ज़' और 'फ़'– इनका प्रयोग केवल अरबी-फारसी के शब्दों में किया जाता है; जैसे-कागज, सजा, जरा, शरीफ़, कफ़न, नफ़रत आदि।

– **विशेष**- 'ड़' और 'ढ़' ध्वनियाँ 'ड' और ढ' से भिन्न हैं। ये दोनों कभी शब्द के प्रारंभ में नहीं आती।

अन्य आधार पर व्यंजनों के भेद

(क) स्वर-तंत्रियों की स्थिति और कंपन के आधार पर :

1. घोष –

– जिन वर्गों के उच्चारण के समय फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से टकराकर (नाद) घोष उत्पन्न करती है, वे घोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ व्यंजन (ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, ब्, भ्, म्), अंत:स्थ व्यंजन (य्, र्, ल्, व्), 'ह्' एवं समस्त स्वरों अर्थात् अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ का 'घोष' प्रयत्न है।

2. अघोष –

– जिन वर्गों के उच्चारण में फेफड़ों से निकलने वाली वायु स्वर-तंत्रियों से बिना टकराये आसानी से निकल जाती है, वे अघोष वर्ण कहलाते हैं। उदाहरणार्थ-प्रत्येक वर्ग के पहले, दूसरे व्यंजन अर्थात् क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ् और श्, ष्, स् का 'अघोष' प्रयत्न है।

(ख) वायु प्रक्षेप की दृष्टि से :

1. अल्पप्राण –

– जिन वर्गों के उच्चारण में कम हवा (प्राण या श्वास) बाहर निकलती है, वे 'अल्पप्राण' कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ व्यंजन (क्, ग्, ङ्, च्, ज्, ञ्, ट्, ड्, ण्, त्, द्, न्, प्, ब्, म्) य्, र्, ल्, व् तथा सभी स्वर अल्पप्राण हैं।

2. महाप्राण –

– जिन वर्गों के उच्चारण में अधिक हवा या श्वास बाहर निकलती है, वे महाप्राण कहलाते हैं। प्रत्येक वर्ग का दूसरा, चौथा व्यंजन (ख्, घ्, छ्, झ्, ठ्, ढ्, थ्, ध्, फ्, भ्), श्, ष्, स्, ह् तथा विसर्ग महाप्राण हैं।

वर्णों के उच्चारण स्थान

– फेफड़ों से निकलने वाली वायु मुख के विभिन्न भागों में जिह्वा (जीभ) का सहारा लेकर टकराती है, जिससे विभिन्न वर्णों का उच्चारण होता है। इस आधार पर वर्णों के निम्नलिखित उच्चारण स्थान हैं-

1. **कंठ (गला) –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ कंठ की ओर मुड़ती है, उनका उच्चारण स्थान 'कंठ' है – अ, आ, अः तथा क वर्ग (क्, ख्, ग्, घ्, ङ्) है। ये कंठ्य' वर्ण कहलाते हैं।
2. **तालु –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ तालु से स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान 'तालु' है – इ, ई, च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्), य्, श्। इन्हें 'तालव्य' वर्ण कहा जाता है।
3. **मूर्द्धा –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ मूर्द्धा (दाँतों से ऊपर खुरदरी जगह) को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान मूर्द्धा है – ऋ, ट वर्ग (ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्), र्, ष्। ये 'मूर्द्धन्य' वर्ण हैं।
4. **दंत –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ दाँतों को स्पर्श करती है, उनका उच्चारण स्थान दंत है – त वर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्), ल्, स्। इन्हें 'दन्त्य' वर्ण कहते हैं।
5. **ओष्ठ –** जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ के सहयोग से ओष्ठ परस्पर मिलकर कार्य करते हैं, उन्हें 'ओष्ठ्य' कहते हैं – उ, ऊ, प वर्ग (प्, फ्, ब्, भ्, म्)।
6. **नासिका –** प्रत्येक वर्ग के पञ्चमाक्षर के उच्चारण में नासिका भी सहायक होती है। इन वर्णों को 'नासिक्य' कहते हैं – अं, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्।
7. **कंठ-तालु** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और तालु के साथ होता है, वे 'कंठ-तालव्य' वर्ण कहलाते हैं - ए, ऐ।

8. **कंठ-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग कंठ और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'कंठोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – ओ, औ।
9. **दंत-ओष्ठ** - जिन वर्णों के उच्चारण में जीभ का सहयोग दंत और ओष्ठ के साथ होता है, वे 'दंतोष्ठ्य' वर्ण कहलाते हैं – व्, फ्।
10. **स्वर यंत्र –** जिस वर्ण का उच्चारण स्थान स्वर यंत्र होता है, वह 'अलीजिह्वा' वर्ण कहलाता है – ह्।

वर्ण विच्छेद –

– शब्द के वर्णों को अलग-अलग करना वर्ण-विच्छेद कहलाता है। इसके ज्ञान द्वारा वर्तनी व उच्चारण की अशुद्धियों से बचा जा सकता है; जैसे-

अचानक – अ + च् + आ + न् + अ + क् + अ

स्वच्छ – स् + व् + अ + च् + छ् + अ

कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ

अभ्यास प्रश्न

1. हिन्दी शब्द किस भाषा का शब्द है-
(a) अरबी (b) फारसी
(c) ईरानी (d) उपर्युक्त सभी

2. निम्नलिखित में से अर्द्धस्वर हैं-
(a) य, व (b) अ, इ
(c) आ, ई (d) ए, ऐ

3. अर्थ के आधार पर भाषा की सबसे छोटी इकाई होती है-
(a) वर्ण (b) ध्वनि
(c) शब्द (d) वाक्य

4. वे वर्ण जिनके उच्चारण में किसी अन्य वर्ण के सहयोग की आवश्यकता नहीं होती, कहलाते हैं-
(a) स्वर (b) व्यंजन
(c) विसर्ग (d) अयोगवाह

5. निम्नलिखित में से 'अयोगवाह' वर्ण है-
(a) अ, आ (b) अं, अः
(c) अ, अः (d) आ, अं

6. 'ह' वर्ण का उच्चारण स्थान होता है-
(a) कंठ (b) काकल्य
(c) अलजिह्वा (d) उपर्युक्त सभी

7. निम्नलिखित में से अल्पप्राण वर्ण नहीं है-
(a) क, ज, ञ (b) च, ड, ण
(c) फ, ब, म (d) त, ब, न

8. निम्नलिखित में से घोष/सघोष वर्ण हैं-
(a) अ, ख, ब (b) ई, ख, फ
(c) ऊ, ज, ध (d) ए, थ, भ

9. यदि ऊपर के होंठ को काट दिया जाए तो किस वर्ण के उच्चारण में असुविधा होगी-
(a) व (b) ब
(c) व और ब दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

10. निम्नलिखित में से स्वर रहित 'र्' का उदाहरण है-
(a) क्रम (b) गृह
(c) ट्रक (d) आशीर्वाद

11. हिंदी में ध्वनियाँ कितने प्रकार की होती हैं?
(a) 2 (b) 4
(c) 6 (d) 8

12. 'र' का विवरण है-
(a) वर्त्स्य, लुंठित, सघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(b) वर्त्स्य, पार्श्विक, सघोष, महाप्राण, व्यंजन
(c) वर्त्स्य, संघर्षी, अघोष, अल्पप्राण, व्यंजन
(d) वर्त्स्य, स्पर्श, सघोष, महाप्राण, व्यंजन

13. जब एक ध्वनि का द्वित्व हो जाए, तब वह क्या कहलाता है?
(a) संयुक्त ध्वनियाँ (b) युग्मक ध्वनियाँ
(c) संपृक्त ध्वनियाँ (d) पारस्परिक ध्वनियाँ

14. स्पर्श व्यंजन, कंठ्य ध्वनि, अघोष और महाप्राण ध्वनि हैं-
(a) क (b) ग
(c) ख (d) घ

15. अनुस्वार किसका कार्य करता है?
(a) विसर्ग का (b) चंद्रबिंदु का
(c) पंचम वर्ण का (d) स्वर का

16. निम्नलिखित शब्दों में से नवीन विकसित ध्वनियाँ कौन-सी है?
(a) ख़, ग़ (b) उ, ऊ
(c) ऐ, औ (d) श, स

17. किन ध्वनियों को 'अनुस्वार' कहा जाता है?
(a) स्वर के बाद में आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ
(b) स्वतंत्र रूप से उच्चरित ध्वनियाँ
(c) स्वर के साथ आने वाली ध्वनियाँ
(d) व्यंजन के बाद में आने वाली ध्वनियाँ

18. किस शब्द में 'ऋ' स्वर नहीं है?
(a) कृपा (b) कृष्ण
(c) दृष्टि (d) ग्रह

19. हिन्दी शब्दकोश में 'क्ष' का क्रम किस वर्ण के बाद आता है?
(a) क (b) छ
(c) त्र (d) ज्ञ

20. निम्नलिखित ध्वनियों में कौन-सी दंत्योष्ठ्य है?
(a) थ (b) फ
(c) म (d) व

ANSWER KEY

1. [b]	2. [a]	3. [c]	4. [a]	5. [b]
6. [d]	7. [c]	8. [c]	9. [b]	10. [d]
11. [a]	12. [a]	13. [b]	14. [c]	15. [c]
16. [a]	17. [a]	18. [d]	19. [a]	20. [d]

♦ ♦ ♦ ♦

ENGLISH

– अंग्रेजी में a, an और the को Articles कहते हैं। ये दो 'प्रकार के होते हैं –
  – Indefinite Articles – a, an
  – Definite Article – the

(1) Indefinite Article –

– A तथा an का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पहले होता है जिनको गिना जा सके जैसे – A chair is made of wood. इस वाक्य में chair को गिना जा सकता है अतः इसके पूर्व a का प्रयोग हुआ है wood (लकड़ी) को यहाँ गिना नहीं जा सकता। अतः इसके पहले Indefinite Article का प्रयोग नहीं हुआ है।

(2) Definite Article-

– यह निश्चित Noun के पहले प्रयोग होता है। जैसे – I went to call the teacher (the teacher of our class).

1. Use of 'A' and 'An' – Indefinite Articles

'A' का प्रयोग

नियम –

(a) Indefinite Article 'a' का प्रयोग साधारणतया उन Nouns के पूर्व किया जाता है जिनकी गिनती की जा सकती है और जिनका उच्चारण व्यंजन (Consonant) की ध्वनि से होता है । जैसे – a dog, a woman, a horse, a boy, a table, आदि ये शब्द क्रमशः 'ड', 'व', 'ह', 'ब' तथा ट ध्वनि से आरम्भ होते हैं। अतः Article 'a' इनके पूर्व लगा है।

(b) जब 'u' की आवाज 'यू' हो। जैसे – a university, a European, a useful thing, a unit.

'An' का प्रयोग।

नियम –

(a) Indefinite Article an' का प्रयोग उन शब्दों से पहले होता है जो किसी स्वर (a, e, i, o, u) से प्रारम्भ हों और जिनका उच्चारण भी स्वर की तरह होता हो। जैसे – an elephant, an ass, an orange, an umbrella, an inkpot.

(b) जिन शब्दों में h' शान्त रहता है, उनसे पहले 'an' का प्रयोग होता है। जैसे – an hour, an honest man, an honourable man.

– A तथा An का प्रयोग निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर समझा एवं प्रयोग किया जा सकता है।

1. प्रथम बार प्रयुक्त होने वाले एकवचन गिनने योग्य संज्ञाओं (Singulaar Countable Nouns) के पहले:
   – I have a book.
   – She lives in a hut.
   – He saw an old man.
   – Mr Sharma is an umpire in this match.
2. ऐसी एकवचन पूरक संज्ञाओं (Noun Complements) से पूर्व जो किसी पेशे या व्यवसाय (profession) से सम्बन्धित हों:
   – She is a nurse.
   – He is an engineer.
   – Neeraj is a doctor.
   – She is an actress.
3. Adjective + Noun की स्थिति में:
   – a big elephant.
   – an old woman.
   – an ugly child.
   – a useful book.
4. ऐसी अभिव्यक्तियों के लिए जो मूल्य, गति, अनुपात आदि का बोध कराती हों:
   – two rupees a kilo, six times a day, eighty rupees a dozen, 20 km an hour, ten rupees d meter, इत्यादि।
5. संख्यात्मक/मात्रात्मक अभिव्यक्तियों से पूर्व:
   – a pair, a couple, a dozen, half a dozen, a hundred, a thousand, a lot, a great deal, a great man, a quarter, a million इत्यादि।
6. 'a' तथा 'an' का प्रयोग 'एक-से' (same) के अर्थ में भी होता है:
   – Birds of a feather flock together.
   – These are two sides of a coin.
   – Men of a mind always group together.
   – Take two at a time.
7. Mr/ Mrs / Miss + surname के पहले वक्ता से उनका परिचय न होने का भाव दर्शाने के लिए a का प्रयोग होता है:
   – a Mr Sharma, a Mrs Mathur, a Miss Gupta इत्यादि।
   – a Mr Sharma से आशय ऐसे व्यक्ति से है, जो Mr Sharma के नाम से पुकारा जाता है परन्तु वक्ता से अपरिचित है; परिचित अवस्था में केवल Mr Sharma या Mrs Mathur .... लिखते हैं।

Exercise : 1

Fill in the blanks with 'a' or 'an':

रिक्त स्थानों को 'a' अथवा 'an' से भरिये–

1. He was .... wise teacher.
2. It was .... long way to the forest.
3. Now cricket has become .... international game.
4. They will be back in .... week.
5. I will finish this work within .... hour.
6. Rani hopes to win .... lottery.
7. He is so good .... umpire that every player respects him.
8. We are to play .... one-day match next week.

9. He is .... honest man of our city.
10. Can you give .... example of a cruel king?
11. My father is .... MLA.
12. My friend's father is .... UDC.

Answers:

1. a	2. a	3. an	4. A
5. an	6. a	7. an	8. a
9. an	10. an	11. an	12. a

2. Use of 'the' – Definite Article

- The एक definite article है और इसका प्रयोग एकवचन व बहुवचन (Singular and Plural Nouns) के पूर्व निम्नलिखित स्थितियों में किया जाता है –

1. एक Noun के पहले जिसका पूर्व में उल्लेख किया जा चुका हो:
- I saw a lion. The lion was sleeping under a tree.
  पहले वाक्य में मैंने एक शेर देखा। (दूसरे वाक्य में वही) शेर पेड़ के नीचे सो रहा था।
- We heard a noise. The noise came from a neighbour's house.

2. Adjectives की Superlative Degree के पहले:
- Ravi is the best singer in the school.
- My uncle is the richest man in the town.

अपवाद :
- किसी सम्बन्धवाचक विशेषण (Possessive Adjective) जैसे: my, his, her, their, your, our के बाद Adjective की Superlative Degree का प्रयोग होने पर the का प्रयोग नहीं होता, जैसे:
- He is my best friend.
- Mr Dixit is our best teacher.

3. किसी शब्द समूह (Phrase) या उपवाक्य (Clause) से सुनिश्चित होने वाले Noun के पहले:
- The girl in the blue skirt is my sister.
- The man with a little nose is our principal.
- The cars made in our factory are the strongest ones.
- The book on the table belongs to the library.
- The man who went out is an excellent singer.

4. ऐसे noun के पहले जो अपनी सम्पूर्ण जाति (the whole class or race) का बोध कराता है:
- The dog is a faithful animal. (यहाँ अर्थ 'समस्त कुत्ता जाति') से है।
- The elephant has a long trunk.
- The cat likes milk.

5. नदियों, सागरों, महासागरों, खाड़ियों, मरुस्थलों, द्वीप-समूहों, पर्वत श्रृंखलाओं, नहरों, जंगलों तथा देशों के बहुवचनीय नामों के पहले:
- The Ganga, The Yamuna (rivers)
- The Bay of Bengal (बंगाल की खाड़ी)
- The Arabian Sea (अरब सागर)
- The Gulf of Mexico (मेक्सिको की खाड़ी)
- The Thar desert, The Sahara Desert (सहारा मरुस्थल)
- The Himalayas (हिमालय पर्वत शृंखला)
- The West Indies, The UK, The USA (संयुक्त राज्य अमेरिका)

Note:
- झीलों के नाम के पूर्व Lake, पर्वत या चोटी के नाम के पूर्व Mount व किसी अन्तरीप के नाम से पूर्व Cape शब्द का प्रयोग होने की स्थिति में the का प्रयोग नहीं होता है, जैसे: Cape Camorin, Mount Everest, Lake Mansarovar इत्यादि।

6. संज्ञा (Noun) की तरह प्रयुक्त होने वाले विशेषण (Adjective) शब्दों के पूर्व the का प्रयोग होता है:
- The brave always rule over the earth. (बहादुर व्यक्ति)
- The rich should help the poor. (अमीर व्यक्ति)
- The weak can never do anything. (कमजोर व्यक्ति)

7. विश्व में अपने ढंग की अनोखी अथवा एकमात्र वस्तुओं के लिए: the sun, the moon, the sky, the earth, the world, the Taj, the Wall of China.

8. दिशाओं के नाम के पहले:
   the east, the west, the south, the north.

9. ऐसे नामों के पहले जो Adjective + Noun के रूप में हों: the National Highway, the New South Coast, the Gold Coast.

10. धार्मिक पुस्तकों, वाद्य-यन्त्रों एवं क्रमवाचक संख्याओं से पूर्व: the Geeta, the Bible, the Quran, the Ramayana, the violin, the flute, the fourth, the last, the next, इत्यादि।

11. Comparative Degree के दो बार प्रयोग की स्थिति में:
- The more you have, the more you want.
- The sooner, the better.
- The higher you go, the cooler you feel.
- The better I know her, the more I admire her.

12. जब किसी Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा) की तुलना किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति, स्थान या वस्तु से की जाती है:
- Kalidas is the Shakespeare of India.
- Kashmir is the Switzerland of Asia.

13. धर्म, समुदाय, जाति, राष्ट्रीयता, राजनीतिक दलों, जहाजों, रेलगाड़ियों, हवाई जहाजों, जलपोतों आदि के नाम के पहले: the Hindus, the Sikhs, the Jats, the Vaishnavas, the English, the Indians, the Americans, the Congress, the BJP., the Nilgiri, the Kanishka, the Vikrant, the Chetak Express.

14. Plural Surnames के पहले पूरे परिवार को बताने के लिए:
- the Guptas, the Sharmas, इत्यादि।
15. शरीर के अंगों के नाम के पहले:
- He caught her by the hair.
- She grabbed him by the neck.
16. तारीखों एवं राष्ट्रीय महत्व के दिनों के पहले:
- the 25th July, the 15th August, the 26th January, the Independence Day, the Republic Day इत्यादि।
17. same, only, opposite, front, end, beginning जैसे शब्दों के पूर्व:
- the same scene, the only son, the opposite party, the front page, the end of the play, the beginning of the story.
18. all, some of .... (Plural Noun), one of .... (Plural Noun), each of .... (Plural Noun) के साथ:
- all the boys, some of the students, one of the girls, each of the winners.

The Omission of the Definite Article

निम्नलिखित स्थितियों में Definite Article 'the' प्रयोग नहीं होता है :

1. Proper Noun (व्यक्तिवाचक संज्ञा), Material Noun (पदार्थवाचक संज्ञा) तथा Abstract Noun (भाववाचक संज्ञा) के पूर्व:
- Arjun was a great archer.
- Gold is costlier than silver.
- Wisdom is greater than wealth.
2. जब किसी Common Noun का व्यापक अर्थ में प्रयोग होता हो:
- Man is mortal.
- Man is a social animal.
3. भाषाओं, अध्ययन के विषयों, सार्वजनिक स्थलों, खेलों, बीमारियों तथा निश्चित समय पर किये जाने वाले भोजनों के नाम के पहले:
- I am learning French.
- She doesn't like physics.
- We go to hospital when we are ill.
- They go to school regularly.
- We play hockey every day.
- She is suffering from pneumonia. (निमोनिया)
- I have lunch at noon.
- He goes to temple daily.
4. राष्ट्रों, रंगों, त्योहारों के नाम के पहले:
- India has a very old and rich culture.
- The leaves of this plant have turned yellow.
- Diwali is celebrated with pomp and show.
5. महीनों, दिनों तथा ऋतुओं के नाम के पहले:
- January is the first month of the year.
- Sunday comes before Monday.
- Spring is the first season of the year. (also The spring)
6. God शब्द के पहले इसका प्रयोग नहीं होता (जब 'G' बड़े अक्षर में लिखा गया हो और इसका अर्थ 'ईश्वर' हो):
- He prayed to God for help.
- God is everywhere and within every soul.
7. kind of तथा sort of के बाद Definite Article नहीं आता है, जैसे:
- What kind of man is he?
- He is a right sort of man.
8. church, market, school, college, hospital, prison, bed के पूर्व Definite Article नहीं लगाते, यदि इनका प्रयोग उसी कार्य के लिए किया जाये जिसके लिए वे बने हों। Church में प्रार्थना के लिए जाते हैं; market में खरीदारी करने के लिए जाते हैं; school, college में पढ़ने के लिए जाते हैं; hospital में इलाज के लिए, prison में सजा भोगने के लिए तथा bed पर सोने के लिए जाते हैं- अतः यदि इसी अर्थ में इन शब्दों का प्रयोग होता है, तो इन शब्दों के पूर्व Definite Article नहीं लगता है। जैसे :
- My son goes to school. (पढ़ने के लिए)
- My father is ill and going to hospital. (इलाज के लिए)
- The thief has been sent to prison. (सजा काटने के लिए)
- You will have to go to court. (वाद-विवाद या झगड़ा निपटाने के लिए)
- I go to bed late at night. (सोने के लिए)
- He goes to church every Sunday. (प्रार्थना के लिए)

लेकिन यदि इनका प्रयोग दूसरे कार्य के लिए हो तो Definite Article लगाते हैं, जैसे :

- I am going to the school to enquire about the progress of my son.
- My father is going to the hospital to see his friend.
- Shall we go to the prison to know the prisoner's condition?
- I am going to the court to see the dacoits.
- The school is at the next crossing.
- The market is closed today.
- The church of Ajmer is very grand.
9. Proper Noun +'s + Noun से पहले Definite Article नहीं आता, जैसे:
- This is Mohan's house. (यहाँ the Mohan's house नहीं लिखना चाहिए।)

- This is Hari's book. (यहाँ the Hari's book नहीं लिखना चाहिए।)
- परन्तु यदि Common Noun के साथ 's आता है, तो इसके पहले Article लगाते हैं, जैसे –
  That is an old man's room.
  This is a priest's hut.

10. Possessive Adjective के बाद Definite Article नहीं लगेगा, जैसे:
    This is my house. I know his address.

Exercise: 2

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x':
निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति 'a', 'an' 'the या 'x' से कीजिये –

1. we study in .... same school.
2. He has suffered .... lot.
3. .... Chetak Express is l0ate today.
4. Sonu is .... tallest boy in his class.
5. A fox is cleverer than .... crow.
6. Gold is .... precious metal.
7. We are going to .... Kolkata next week.
8. We should help .... poor.
9. Swimming is .... useful exercise.
10. He works in .... insurance company.

Answers:

1. the	2. a	3. The	4. The
5. a	6. a	7. x	8. The
9. a	10. An		

Exercise : 3

Fill in the blanks with 'a', 'an', 'the' or 'x':
रिक्त स्थानों की पूर्ती 'a', 'an', 'the' या 'x' से कीजिये –

1. This morning my daughter expressed her desire to go to .... school.
2. All of us must be careful about disposing .... waste.
3. Some of the waste from .... kitchen can be dumped into a pit.
4. Abhay would spend hours together in front of .... screen.
5. Rathore joined .... Indian Forest service in 1960 as a park ranger.
6. Once upon .... time there was a great kingdom, named Mahapal.
7. But .... people of Maha pal were not happy.
8. King Mahender declared Vikram .... prince of Mahapal.
9. Hope this letter finds you in .... best of spirits.
10. Anjali visited me .... last week.

Answers:

1. x	2. the	3. the	4. The
5. the	6. a	7. the	8. the
9. the	10. x		

♦♦♦♦

विज्ञापन

सफलता की चाबी
राजस्थान परीक्षा हेतु PYQ's सीरीज़

लक्ष्य क्लासेज उदयपुर के विषय विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में,
अक्षांश प्रकाशन द्वारा प्रकाशित।

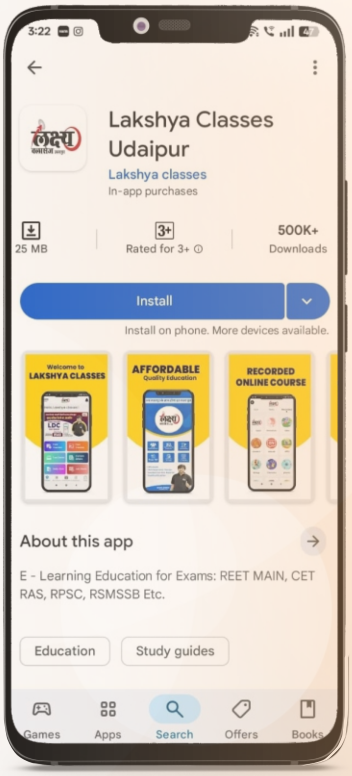

Scan to Download Lakshya App Now

Google play

MRP : ₹ 799

व्याख्यात्मक हल
लक्ष्य क्लासेज़, उदयपुर
के यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध

S.No. AP0073 CODE : APGC NRT

राजस्थान के सभी बुक स्टोर्स एवं लक्ष्य क्लासेज एप्लीकेशन पर उपलब्ध!

सफलता के पथ पर सबसे तेज उभरता हुआ संस्थान
लक्ष्य क्लासेज™

M. 9079798005, 6376491126
Plot No 1104, Shiksha Mandir, Sec 4, Circle, Main Road, Udaipur